खंड 4

मानवजाति के महान विभाजन

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 11	विश्व की प्रमुख नस्लें	167
इकाई 12	नस्लों का वर्गीकरण	181
इकाई 13	नस्ल और नस्लवाद	201
प्रायोगिक निर्देशिका		215
सुझावित अध्ययन		241

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 11 विश्व की प्रमुख नस्लें *

इकाई की रूपरेखा

11.0 परिचय

11.1 प्रमुख नस्लों के वर्गीकरण

- 11.1.1 नेग्रॉइड समूह
- 11.1.2 काकेशॉयड समूह
- 11.1.3 मोंगोलोइड समूह

11.2 नस्ल के विभिन्न वर्गीकरण की आलोचना

11.3 सारांश

11.4 संदर्भ

11.5 आपकी प्रगति जांच के लिए उत्तर

अधिगम उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन उपरांत आप निम्न बातें समझेंगे

- मानवजाति की विभिन्न नस्लें और अन्य नस्लीय उप-समूह तथा
- मानवजाति के सभी तीन प्रमुख नस्लों नीग्रॉइड, काकेशॉयड और मंगोलॉयड की विस्तृत जानकारी।

11.0 परिचय

यह एक सामान्य अवलोकन है कि मनुष्य एक-दूसरे से शारीरिक रूप से और आकारकीय रूप में भी भिन्न होते हैं। मानवविज्ञानियों ने कुछ सामान्य शारीरिक विशेषताओं के आधार पर इसे समूहों में वर्गी त करने की कोशिश की है। एशले मोंटगुए (1964) के अनुसार एक नस्ल व्यक्तियों या एक समान या समान बाहरी विशेषताओं वाली आबादी है, जो उनके सामान्य आनुवंशिकता या वंश द्वारा निर्धारित की गई है। इन विशेषताओं में त्वचा, बालों का रंग–रूप और मात्रा, नाक का आकार, सिर और चेहरे, आंखें, कद, उंगली और हथेली के प्रिंट शामिल हैं। मानवजाति की समग्र विविधता को एक समूह में वर्गी त करने के लिए मानवविज्ञानियों की प्रा तिक जिज्ञासा थी ताकि उन्हें वर्णित करना आसान हो जाए। नस्ल के बीच लक्षणों और विशेषताओं के मिश्रण का बहुत अधिक अतिच्छादन है। नस्ल के वर्गीकरण की व्यवस्था अपर्याप्त है। यह अनुमान लगाया गया है कि अलग-अलग लोगों की शारीरिक विशेषताओं का जन्म विभिन्न प्रकार के पारिस्थितिकीय क्षेत्रों के अनुकूलन के कारण हुआ है, जिसमें वे सदियों से एक साथ रहते हैं। इस इकाई में आपको मानवविज्ञानियों द्वारा वर्गीकृत मानवजाति के विभिन्न नस्लीय समूहों के बारे में जानकारी मिल जाएगी। यह समझा जाना चाहिए कि विभिन्न मानवविज्ञानियों द्वारा प्रदान किए गए वर्गीकरण स्वेच्छित हैं क्योंकि वे मुख्य रूप से शरीर की शारीरिक विशेषताओं पर आधारित हैं।

* प्रो. एस.पी. सिंह, सेवानिवृत्त, मानव आनुवांशिकी विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, पटियाला

जीव विज्ञान में, एक नस्ल' को प्रजाति के उप-भाग के रूप में प्रथागत रूप से परिभाषित किया गया है, जो कि प्रजातियों की थोर आबादी से अलग भौतिक विशेषताओं की विरासत के रूप में मिला है (मोंटगु, 2001)।

मानवविज्ञानी और जीवविज्ञानियों के बीच नस्ल, ऐतिहासिक रूप से मानव की जैवि विविधताओं के भौगोलिक प्रचलन के बारे में एक विचार रहा है। धार्मिक समूहों, भाष समूहों या राष्ट्रीयताओं को संदर्भित करने के लिए आधुनिक मानववैज्ञानिकों द्वारा नर की आवधारणा का उपयोग कभी नहीं किया जाता है। अंतर्निहित जैविक मतभेदों व दर्शाते हुए लोगों और जनसख्या के बीच कई रचनात्मक या आकारकीय अंतर ह त्वचा, आंख ,बालों के रंग और शरीर के आकार सहित नग्न आंखों के लिए कु आकारकीय मतभेद दिखाई देते हैं। कुछ अन्य जैविक अंतर वास्तविक हैं लेकि आसानी से नहीं देखे जाते हैं इनमें रक्त का प्रकार, फिंगरप्रिंट पैटर्न, और रोग व संवेदनशीलता शामिल हैं। इन सभी लक्षणों को ध्यान में रखते हुए जो हमारी नस्लों सदस्यों के बीच भिन्न हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है विहोमो सेपियंस एक स्पीसीज है जिसमें काफी जैविक मतभेद हैं। इस तरह की भौगोलिक प्रचलन युक्त जैवि विविधता नस्लीय वर्गीकरण की पारंपरिक अपक्व सामग्री है। हम विभिन्न मानव आबा को अलग करने वाले कुछ जैविक लक्षणों में भिन्नता के भौगोलिक प्रचलन के रूप नस्ल को परिभाषित कर सकते हैं (एनीमोन, 2011)

11.1 प्रमुख नस्लों का वर्गीकरण

मानवजाति की विविधता मानववैज्ञानिकों द्वारा तीन प्रमुख समूहों या जातियों में वर्णित की गई है। इन्हें नेग्रॉइड, काकेशॉयड और मंगोलॉयड के नाम से जाना जाता है।

11.1.1 नेग्रॉइड समूह

नीग्रोइड नस्ल मुख्य रूप से उप-सहारा अफ्रीका में वितरित है। उनके पास बहुत ही अनोखी चेहरे की विशेषताएं हैं। नीग्रोइड समूह का प्रतिनिधित्व मुख्य रूप से अफ्रीकी लोगों द्वारा किया जाता है। नेग्रॉइड समूह की विशिष्ट विशेषताएं हैं :

- त्वचा का रंग गाढ़े भूरे से काले रंग का होता है
- सिर के बाल नी, मजबूत और घुंघराले होते हैं
- सिर का आकार अधिक लंबा है लेकिन कम चौड़ा
- नाक चौड़े और चपटे आकार की होती है
- होंठ मोटे और बहिर्वलित होते हैं एवं
- शरीर पर कम बाल वितरित होता है।

नीग्रोइड समूह के विभिन्न उप समूह हैं और इन्हें नीचे वर्णित किया गया है:

क) वास्तविक नीग्रो

वास्तविक नीग्रो वे हैं जिनके पास नीग्रो के लगभग सभी लक्षण होतें हैं। वे पश्चिम अफ्रीका में रहते हैं और सेनेगल नदी के इलाकों में नाइजीरिया की पूर्वी सीमा तक रहते

हैं। उनकी औसत ंचाई पांच फीट आठ इंच है। उनकी भुजाएं और पैर लंबे होते हैं और वे मजबूती से निर्मित हैं। त्वचा का रंग काला है। सिर लंबे और विशिष्ट उद्हनुता वाले होते हैं। नाक का आकार चौड़ा और चपटा होता है।

ख) जंगली नीग्रो

जंगली नीग्रो अफ्रीका के सूडान, युगांडा और पड़ोसी क्षेत्रों में रहते हैं। उनके पास लंबी बाहें लेकिन छोटे पैर होते हैं। उनकी छाती बैरल के आकार की होती हैं और उनके सिर लंबे होते हैं। उनके होंठ बहिर्वलित होते हैं। इन लोगों का शरीर बलिष्ठ होता है। माथे ढालू और निचला चेहरा उद्हनुता लिए हुए होता है ।

ग) नीलोटिक नीग्रो

महान नील नदी के साथ सूडान और परी नाइल घाटी के निवासी हैं। नीलोटिक नीग्रो के शरीर लंबे और बहुत पतले होते हैं और त्वचा का रंग गाढ़ा होता है। उनके सिर लंबे लेकिन चेहरा उद्हनुता लिए हुए नहीं होता है । औसत ंचाई पांच फीट और दस इंच है।

घ) अर्ध हैमिट्स **(Hamites)**

केन्या, युगांडा और सूडान के विभिन्न क्षेत्रों में रहते हैं। इनकी त्वचा का रंग विभिन्न प्रकार के भूरे रंग वाला होता है। सिर के बाल नी हैं। नाक चौड़ी और चपटी होती है। इनके कद की औसतन ंचाई पांच फीट और आठ इंच है। इनका सिर लंबा होता है।

) बंटू भाषी नीग्रो

मध्य और दक्षिणी अफ्रीका में रहने वाले अधिकांश लोग बंटू भाषी नीग्रो हैं । त्वचा का रंग पीले से काले भूरे रंग के होता है। इन लोगों की औसत ंचाई पांच फीट और छह इंच है।

च) बुशमैन

दक्षिणी अंगोला और कालाहारी रेगिस्तान के कुछ हिस्सों में रहते हैं। पहले के समय में वे पूरे दक्षिण अफ्रीका और मध्य अफ्रीका के उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में रहते थे। लेकिन अब उनकी जनसंख्या में काफी कमी आई है और उन्हें केवल अफ्रीका के छोटे क्षेत्रों तक ही सीमित कर दिया गया है। बुशमैन शारीरिक बनावट में विशिष्ट हैं और अन्य नीग्रो उप समूहों से अलग हैं। बुशमैन के अधिकांश लोग ंचाई में बहुत छोटे है और पिग्मी की तरह दिखते हैं लेकिन उनमें से कुछ लंबे भी होते हैं। उनकी औसत ंचाई पांच फीट और दो इंच है। इनके पास मध्यम आकार के सिर होते हैं जो न तो लंबे और न ही चौड़े होते हैं। इनके हाथ और पैर छोटे होते हैं, शरीर का आकार दुबला होता है, शरीर की तुलना में हाथ और पैर लंबे होते हैं। सिर के बाल काली मिर्च के तरह कसकर घुमाए हुए होते है। शरीर पर बाल की कमी होती है और चेहरे के बालों का विकास तेजी से होता है। इनके पास छोटी और विस्तृत नाक है। ठोड़ी आम तौर पर इंगित होती है और कान छोटे होते हैं।

छ) होटेंट्स

होटेंट्स आमतौर पर पश्चिम अफ्रीका के पश्चिमी हिस्से में रहते हैं। बुशमैन और होटेंट्स एक दूसरे के समान हैं। बुशमैन की तुलना में होटेंट्स के सिर लंबा और कद ंचा होता है।

ज) पिग्मी

प्रारंभिक मानवविज्ञानियों ने पिग्मी को सबसे आदिम लोगों के रूप में माना था । उनकी विशेषता उनका छोटा कद है। पिग्मी की औसत ंचाई 4 फीट और 8 इंच है। उनके सिर के बाल न के समान होते हैं और उनकी त्वचा का रंग पीले, भूरे या काले रंग की विविधता दर्शाता है । नाक का आकार चौड़ा और चपटा होता है । होंठ और आंखें बड़ी होती हैं। सिर का आकार मध्यम से चौड़ा होता है। इनमें आमतौर पर उद्हनुता देखी जाती है। पिग्मी का भौगोलिक वितरण अफ्रीका में कांगो क्षेत्र से मलय और पूर्वी सुमात्रा, अंडमान द्वीप समूह और फिलीपीन द्वीपों तक फैला है। भौगोलिक वितरण और शारीरिक विशेषताओं के आधार पर, पिग्मी को आगे तीन अलग-अलग समूहों में विभाजित किया जाता है, जैसे अफ्रीकी पिग्मी, एशियाटिक पिग्मी और महासागरीय पिगमी ।

झ) वेद्दाह

सिलोन के वेद्दाह की औसत ंचाई लगभग पांच फीट है। उनके सिर के बाल लहरदार या थोड़े घुमावदार होते हैं जो आम तौर पर काले होते हैं। चेहरे के बाल, ठोड़ी पर तितर-बितर होते हैं और शरीर के बालों में आम तौर पर कमी होती है। सिर का आकार छोटा होता है और इसकी बनावट लंबी होती है ।

) पूर्व-द्रविड़

मध्य और दक्षिणी भारत के हिस्सों में रहते हैं और इन्हें इन क्षेत्रों के सबसे पुराने निवासियों के रूप में माना जाता है। यह तर्क दिया जाता है कि पहले वे भारत के बड़े हिस्सों में रहते थे लेकिन अब जंगलों में रहते हैं। उनमें से प्रमुख हैं भील, गोंड, उराओं, कादर, कुरुम्बा, पनीयान आदि। इ नकी औसत ंचाई पांच फीट और दो इंच (157 सेमी) होती है। त्वचा का रंग काला है और सिर का आकार दीर्घशिरस्क (डॉलिकोसेफलिक) होता है। माथा थोड़ा ढालू होता है। भ्रूकटक (Brow ridges) मध्यम विकसित होते हैं।

ट) ऐनू

ऐनू को जापान के मूल निवासी माना जाता है जिन्हें मजबूर कर उत्तरी क्षेत्रों में स्थानांतरित किया गया था। वर्तमान में वे उत्तरी जापान के होक्काइडो और सखालिन द्वीपों में रहते हैं।

ऐनू लोगों के चेहरे और सिर के बाल की एक अलग विशिष्टता होती है जो अन्य किसी मानव समूह में नहीं पायी जाती है। इनकी त्वचा के रंग भूरे से सफेद की एक श्रृखला दिखाता है। इनकी औसत ंचाई पांच फीट और दो इंच की होती है और इनका शरीर काफी छोटा और कंधे की ओर सीने पर चौड़ा होता है (stockily built)। सिर का आकार मध्यमशिरस्क (मेसोसेफलिक) होता है।

क्रैनियल मॉर्फोलॉजी के आधार पर पहला वर्गीकरण एनाटॉमी के प्रोफेसर एंडर्स रेटजियस (1840) द्वारा किया गया था। रेटजियस ने उन लोगों को जिनके खोपड़ी का आकार लंबा था दीर्घशिरस्क (डॉलिकोसेफलिक) के रूप में वर्णित किया, और जिन लोगों की खोपड़ी का आकार छोटा था उन्हें लघुशिरस्क (ब्रेकीसेफलिक) के रूप में वर्णित किया। हालांकि, उन्होंने दोनों समूहों में अलग-अलग प्रकारों के बीच सीमा निर्धारित करने के लिए कोई संख्यात्मक मूल्य नहीं दिया और न ही उन्होंने मध्यमशिरस्क (मेसोसेफलिक) शब्द का उपयोग किया, जिसे बाद में दिया गया था। रेटजियस द्वारा उपयोग किए जाने वाले तरीकों को यदि जीवित व्यक्तियों पर अपनाया जाता है तो उसे शिरस्य सूचकांक(सेफलिक इंडेक्स) के रूप में जाना जाता है और मृत्य कपाल पर अपनाया जाता है तो उसे कपालीय सूचकांक(क्रैनियल इंडेक्स) के रूप में जाना जाता है । इन सूचकांक की गणना अधिकतम चौड़ाई और अधिकतम लंबाई के बीच अनुपात निर्धारित करके की जाती है। इस अवधारणा को बाद में मध्यवर्ती मापकों की परिभाषा के साथ और व्यापक बनाया गया जो एक वर्गीकरण प्रणाली प्रदान करता है और मानव चेहरे के आकार में विविधता को अधिक सटीक रूप से दर्शाता है।

इस प्रकार सेफलिक और क्रैनियल इंडेक्स दोनों खोपड़ी के आकार के मापन से संबंधित । चेहरे के अनुपात का वर्णन करने के लिए मानवविज्ञान में उपयोग की जाने वाली इंडेक्स चे की सूचकांक है, जो मोरफोलॉजिकल चेहरे की लम्बाई का उत्पाद है, जो नेजिओ(N) से गेनाथियन (Gn) निर्दिष्ट बिन्दुओं के मध्य मापा जाता है, जो बाईजीगोमैटिक चौड़ाई विभाजित होता है, जिसका मापन दाएं तथा बाएं जीगियन(zyr-zyl) के मध्य होता है। चेहरे की अनुक्रमणिका में उपयोग की जाने वाले शब्द यूनानी भाषा से लिए गए है, जहां चेहरे लिए प्रोसोपोन(prosopon) शब्द का उपयोग होता है । इस वर्गीकरण प्रणाली के अनुसा संख्यात्मक मूल्यों को निर्धारित किया जाता है जो यूरीप्रोसोपिक, मेसोप्रोसोपिक और लेप्टोप्रोसोपि श्रेणियां में विभाजित हैं (फ्रैंको और अन्य2013)।

तालिका 1 सेफलिक इंडेक्स के अनुसार शिरस्य वर्गीकरण

शिरस्य सूचकांक Cranial Index	अधिकतम सिर की लम्बाई x 100 / अधितम सिर की चौड़ाई
अतिशयदीर्घशिरस्क Ultraolichocephalic	X – 64.9
अति दीर्घशिरस्क Hyperdolichocephalic	65.0-69.9
दीर्घशिरस्क Dolichocephalic	70.0 - 74.9
मध्यमशिरस्क Mesocephalic	75.0 - 79.9
लघुशिरस्क Brachycephalic	80.0 - 84.9
अतिलघुशिरस्क Hyperbrachycephalic	85.0 - 89.9
अतिशयलघुशिरस्क Ultrabrachycephalic	90.0 – X

तालिका 2 चेहरे की अनुक्रमणिका के अनुसार चेहरे का वर्गीकरण

कपालीय सूचकांक Facial index	*मोरफोलॉजिकल चेहरे की लम्बाइ*u 100 *बाईजीगोमैटिक चौड़ाई*
अति चौड़ा चहेरा Hypereuryprosopic	u - 79.9
चौड़ा चहेरा Euryprosopic	80.0 - 84.9
मध्यम चहेरा Mesoprosopic	85.0 - 89.9
पतला चहेराLeptoprosopic	90.0 - 94.9
अति पतला चहेरा Hyperleptoprosopic	95.0 - u

11.1.2 काकेशॉयड समूह

काकेशॉयड को आम तौर पर व्हाइट' लोगों के रूप में जाना जाता है। हालांकि, यह शब्द भ्रामक प्रतीत होता है क्योंकि इस समूह में काले त्वचा के रंग वाले लोग भी शामिल हैं। इस समूह की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

- सिर के बाल आमतौर पर लहरदार लेकिन सीधे या कुछ हद तक घुंघराले होते हैं
- त्वचा का रंग सफेद से भूरे रंग का हो सकता है
- सिर का आकार पतले से चौडे आकार की विविधता दिखाता है
- पतली और नुकीली नाक
- चेहरा सीधा होता है और उद्हनुता नहीं दिखती है
- गाल की ह ियां प्रमुखता से उभरी हुई नहीं होती हैं
- होंठ आम तौर पर पतले होते हैं एवं
- माथे और ठोड़ी अपेक्षा त उन्नत होते हैं।

काकेशॉयड में निम्नलिखित उप-समूह शामिल हैं :

क) भूमध्यसागरीय **(Mediterranean)**

यह विभिन्न आबादियों का एक बड़ा समूह है जो भूमध्य सागर से हर दिशा में फैले क्षेत्रों यहा तक की उत्तरी भारत तक के क्षेत्रों में रहते है। इनमें पुर्तगाली, इटालियंस, स्पेनिश, फ्रांसीसी, तुर्क, यूनानी, ईरानियन, भारतीय, अफगान और उत्तरी अफ्रीकी शामिल हैं। इनकी त्वचा का रंग शोधित (टैन्ड) सफेद से भूरा होता है। बाल आमतौर पर काले होते है। सिर दीर्घशिरस्क (डॉलिकोसेफलिक) होता है। औसत ंचाई पांच फीट, चार इंच होती है। चेहरा उद्हनुता नहीं दिखाता है। होंठ उभरे हुए होते है।

इस उप समूह में तीन अलग-अलग प्रकार पाए जा सकते हैं जिन्हें मूल भूमध्यसागरीय, अटलांटो भूमध्यसागरीय और इरानो अफगान भूमध्यसागरीय कहा जाता है।

ख) नॉर्डिक

नॉर्डिक लोग स्कैंडिनेवियाई देशों जैसे आइसलैंड, नीदरलैंड, बेल्जियम, जर्मनी, पोलैंड और पश्चिमी रूस में रहते हैं। बालों का रंग सुनहरे से दूसरे हल्के रंगों तक का होता है। त्वचा का रंग सफेद या थोड़ा गुलाबी होता है। आंखें या तो नीली या भूरी होती है। सिर या तो लंबा या मध्यम चौड़ाई वाला होता है। नाक उन्नत, लंबी और नुकीली होती है। औसत ंचाई पांच फीट आठ इंच (172 सेमी.) होती है।

ख) अल्पाइन

अल्पाइन लोग यूरोप, फ्रांस, रूस और साइबेरिया के आल्प्स पर्वत के क्षेत्रों में रहते हैं। अल्पाइन लोगों के पास विकसित भ्रूकटक (Brow ridges) के साथ चौड़े सिर होते हैं। बालों का रंग सफेद या काला भूरा होता है। औसत ंचाई पांच फीट पांच इंच (165 सेमी.) होती है। नाक की नोंक उन्नत होती है। ये बलिष्ठ होते हैं।

ग) डाईनेरिक

स्विट्जरलैंड, स्लोवाकिया और अल्बानिया का क्षेत्र डाईनेरिक का घर है। मुख्य रूप से वे मध्यमशिरस्क (Mesocephalic) से लघुशिरस्क (Brachycephalic) तक होते है। माथे आमतौर पर र्ध्वाकार होते हैं। बालों का रंग काला से भूरा होता है जबकि सिर के बाल सीधे या लहरदार होते हैं। उनके पास उभरे होंठ और विकसित ठोड़ी होती है। नाक आमतौर पर घुमावदार और नोंक मांसल होती है। उनकी औसत ंचाई पांच फीट आठ इंच (172 सेमी.) होती है।

) आर्मेनॉयड

इन लोगों का भौगोलिक वितरण ब्लैक सागर, अर्मेनिया और तुर्की के पूर्वी हिस्से में है। ये डाईनेरिक लोगों के साथ अधिक समानता रखते हैं। इनके पास घुमावदार और मांसल नाक हैं जो नोंक पर उन्नत है। मुख्य रूप से ये मध्यमशिरस्क (Mesocephalic) से लघुशिरस्क (Brachycephalic) तक होते हैं। बालों का रंग काले भूरे से काला होता है। आर्मेनोइड्स की औसत ंचाई पांच फीट छह इंच (167 सेमी) होती है।

च) हामिइट्स

हामिइट्स पूर्वी और उत्तरी अफ्रीका के विशाल क्षेत्रों में रहते हैं। इनकी त्वचा का रंग सफेद से काले रंग की विविधता दिखाता हैं। सिर के बाल सीधे से घुंघराले हो सकते हैं। उनके शरीर पर बहुत कम बाल होते हैं। सिर का आकार दीर्घशिरस्क (डॉलिकोसेफलिक) होता है। इनके चेहरे लंबे और ठोड़ी उन्नत होती है। इनका शरीर दुबला होता है और ये पांच फीट पांच इंच (165 सेमी) की औसत ंचाई के होते हैं।

छ) पूर्वी बाल्टिक

बाल्टिक समूह जर्मनी, पोलैंड, फिनलैंड और अन्य बाल्टिक क्षेत्रों के मूल निवासी है। इनके बाल, त्वचा और आंखों में बहुत कम पिग्मेंटेशन होता है इसलिए ये आमतौर पर गोरे होते हैं, बहुत हल्की रंगीन आंखों के साथ त्वचा का रंग सफेद होता है। सिर चौड़ा जिसका अर्थ है कि ये लघुशिरस्क (ब्रैकिसेफलिक) होते हैं। इन्हें चौकोर सिर वाले लोग

कहा जाता है क्योंकि इनके सिर सभी क्षेत्रों में समान रूप से और आनुपातिक रूप से विकसित होते हैं । औसत ंचाई पांच फीट चार इंच (164 सेमी) होती है।

ज) लैप

लैप स्वीडन, नॉर्वे, फिनलैंड और रूस के कुछ क्षेत्रों में रहते हैं। ये बहुत कठोर बर्फीली स्थितियों में तटीय क्षेत्र, जंगलों और नदियों के आसपास रहते हैं। इनके पास लघुशिरस्क (ब्रैकिसेफलिक) होते हैं और माथे सीधे लेकिन पतले होते हैं। त्वचा का रंग पीला भूरा होता है जबकि बालों का रंग भूरा और काला होता है। बालों की बनावट सीधी या लहरदार होती है। इनकी औसत ंचाई पांच फीट तीन इंच (159 सेमी) होती है।

झ) इंडो -द्रविड़ियन

इंडो-द्रविड़ि भारत और सिलोन (श्रीलंका) के अधिकांश हिस्सों में रहते हैं। सिर का आकार काफी हद तक दीर्घशिरस्क से लघुशिरस्क तक होते हैं। चेहरे पतले, छोटे और बिना किसी उद्हनुता के होते हैं। त्वचा का रंग गहरा भूरा और बाल आम तौर पर काले होते हैं। इनके पास उभरे होंठ और उन्नत नाक होती है और इनकी औसत ंचाई पांच फीट चार इंच (164 सेमी.) होती है।

) पॉलिनेशियन

पॉलीनेशियन हवाई द्वीपों से फिजी द्वीप समूह और न्यूजीलैंड तक फैले भौगोलिक क्षेत्र में रहते हैं। ये बहुत बलिष्ट होते हैं। इनके सिर का आकार लघुशिरस्क होता है और गाल की ह ियां उन्नत होती हैं। इनके पास अच्छी तरह से विकसित ठु ी के साथ चौड़े चेहरे होते हैं। त्वचा का रंग हल्का भूरा होता है जबकि बालों का रंग काले से काला भूरा होता है। बाल आमतौर पर सीधे या लहरदार होते हैं। औसत ंचाई पांच फीट आठ इंच (172 सेमी.) होती है।

11.1.3 मंगोलोइड्स समूह

मंगोलोइड्स शायद मध्य एशिया में जन्मे हैं और विभिन्न दिशाओं में फैल गए। इस समूह में विशाल और विविध भौगोलिक वितरण है। चीन और जापान के लोग इस समूह के प्रमुख प्रतिनिधि हैं। मोंगोलोइड्स समूह को निम्नानुसार वर्णित किया गया है :

- त्वचा का रंग पीले रंग से भूरे रंग का होता है
- मुख्य रूप है लघुशिरस्क (ब्राकिसिफैलिक)होते हैं
- बालों का रंग काला और बालों की बनावट आम तौर पर सीधी होती हैं
- गाल की ह ियां बहुत उन्नत होती हैं
- परी पलक में त्वचा की एक परत होती है जिसे एपीकैन्थिक परत कहा जाता है एवं
- शरीर की सतह पर प्रति इकाई बाल घनत्व बहुत कम होता है।

मंगोलोइड समूह के चार प्रमुख उप-समूह हैं, जैसे केंद्रीय या शास्त्रीय मंगोलोइड्स, आर्कटिक मंगोलोइड्स या एस्किमोइड्स, अमेरिकी भारतीय या अमेरइन्डियन और इंडोनेशियाई मलेशियन।

ट) मुख्य या पारंपरिक मंगोलोइड्स

मंगोलोइड्स की लगभग सभी विशेषताएं इस समूह में मौजूद हैं। इस समूह में रहने वाले उत्तरी चीन, तिब्बत और मंगोलिया क्षेत्रों में निवास करते हैं। इनका मुख्य रूप से लघु चेहरा है और आंखों पर एपीकैन्थिक परत हमेशा मौजूद होती हैं। इनके पास उन्नत गाल की ह ियां और चपटे चेहरे होते हैं।

ठ) आर्कटिक मंगोलोइड्स या एस्किमोइड्स

उत्तरी अमेरिका के ग्रीनलैंड, अलास्का, आर्कटिक तट के क्षेत्र, पूर्वोत्तर एशिया आर्कटिक मंगोलोइड्स या एस्किमोइड्स का घर मानते हैं। यह समूह ठेठ एपीकैन्थिक परत आंखों वाले , उन्नत गाल की ह ियों, काले और सीधे बालों, बड़े धड़ और छोटे भुजाओं वाले होते हैं।

ड) अमेरइन्डियन

उत्तर, मध्य और दक्षिण अमेरिका के मूल इंडियन मंगोलियाई लोग इस समूह में आते हैं। त्वचा का रंग पीले भूरे से लाल भूरे रंग का होता है। बाल आम तौर पर सीधे या सफेद और काले रंग के होते हैं। शरीर और चेहरे पर बाल का विकास बहुत दुर्लभ होता है। आंतरिक एपीकैन्थिक परत आंख पर मौजूद होती है लेकिन बाहरी एपीकैन्थिक परत आंख पर हमेशा मौजूद नहीं होती है। चेहरा बड़ी गाल की ह ियों के साथ चपटे होता है।

ढ) इंडोनेशियाई -मलय

इंडोनेशियाई-मलय लोगों (औसत ंचाई पांच फीट और दो इंच) की तुलना में थोड़ा छोटा (औसत ंचाई पांच फीट और एक इंच) है, जबकि इंडोनेशियाई-मलेशिया के चहरे लंबे और समय मलय के चहरे चौड़े होते हैं। मंगोलियाई समूह की अन्य विशेषताएं इंडोनेशियाई समूह की तुलना में मलय समूह से अधिक दिखती हैं। इंडोनेशियाई-मलेशिया दक्षिण चीन, बर्मा और थाईलैंड के विभिन्न क्षेत्रों में निवास करते हैं । यह समूह मलय प्रायद्वीप, फिलीपींस और जापान से संबंधित है।

अपनी प्रगति को जाचें

1) नीग्रोइड समूह की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन करें।

.....

.....

.....

.....

2) काकेशॉयड और मंगोलोइड समूहों के बीच तुलना करें।

.....

.....

.....

3) नस्लीय वर्गीकरण के आधार का निर्माण करने वाली महत्वपूर्ण विशेषताओं का वर्णन करें।

.....

.....

.....

.....

4) मंगोलियाई लोगों के भौगोलिक वितरण क्या है

.....

.....

.....

.....

11.2 नस्ल के विभिन्न वर्गीकरण की आलोचना

इस दुनिया में रहने वाले सभी मनुष्य *होमो सेपियंस* एक नस्ल से संबंधित हैं। फिर भी बाहरी उपस्थिति के आधार पर वे एक-दूसरे से बहुत अलग दिखते हैं। हो सकता है कि यह त्वचा का रंग, नाक का आकार, आंखों का रंग, सिर का आकार या बाल के रूप और रंग अलग हो। मानव जाति के उपरोक्त वर्गीकरण को तीन प्रमुख समूहों और कई उप समूहों में बाटा जाता है लेकिन कई दोषों के कारण इन्हें अक्सर त्रुटिपूर्ण माना जाता है जिनमें से कुछ नीचे वर्णित हैं :

1) *स्वेच्छित और अपरिष्त*

मानवजाति के वर्गीकरण को इस तथ्य से स्वेच्छित और अपरिष्त रूप में संदर्भित किया जा सकता है कि यह स्पष्ट रूप से विशिष्ट विशेषताओं पर आधारित है। इन विशेषताओं में त्वचा का रंग, सिर, नाक और बाल आदि का आकार शामिल है। जिसमें अंतर्निहित अनुवांशिक संबंधों पर विचार नहीं किया गया है, इस प्रकार इस वर्गीकरण का आधार नहीं बनता है। मनुष्यों ने हमेशा भोजन और सुरक्षा की तलाश में प्रवसन किया है। नस्लीय मिश्रण, विभिन्न समूहों के मिलने के साथ होता है, संभवतः यही जीनपूल और जीन आवृत्तियों में परिवर्तन का कारण बना हो। मानव समूह गतिशील होते हैं और अपने आवास को बदलते रहते हैं। जिसके अनुसार नस्लीय मिश्रण विभिन्न समूहों के गठन का कारण बन सकता है। संक्षेप में, यह निष्कर्ष निकालना तर्कसंगत है कि वर्तमान वर्गीकरण के आधार का मानदंड स्वेच्छिक और मनमाना रहा है।

2) *एक सीमित कारक के रूप में भौगोलिक वितरण*

मानव जाति के विभिन्न समूहों का वर्णन करने में भौगोलिक क्षेत्रों की निरंतरता इस वर्गीकरण का मुख्य आधार रहा है। हालांकि, कई अन्य विशेषताओं वाले लोगों को एक दूसरे से दूर कई क्षेत्रों में देखा जा सकता है। लेकिन इन्हें भौगोलिक दूरी के आधार पर उस समूह में शामिल नहीं किया जा सकता है।

3) *विशेषताओं का अतिच्छादन*

नस्लीय वर्गीकरण के लिए उपयोग की जाने वाली विशेषताओं में निरंतरता दिखती है और इसलिए प्रत्येक विशेषता के लिए एक कटऑफ सीमाओं का निर्धारण वास्तविक कठिनाई होती है। एक विशेषता के लिए समूह विविधताओं के भीतर वर्गीकरण की विशेषता के रूप में अर्हता प्राप्त करने के लिए समूह विविधताओं के बीच तुलनागत रूप में बहुत छोटा होना चाहिए। लेकिन ऐसा नहीं होने के कई उदाहरण उपलब्ध हैं, नस्लीय वर्गीकरण की सटीकता से समझौता है। यदि विशेषताओं में कोई निरंतरता नहीं थी, तो नस्लीय वर्गीकरण का मुद्दा बहुत आसानी से सुलझाया जा सकता था, लेकिन यह मामला ही नहीं है।

4) *कोई अनुवांशिक आधार नहीं*

वर्तमान वर्गीकरण विभिन्न समूहों में मतभेदों के अनुवांशिक आधार पर विचार नहीं करता है। बेशक, मानवविज्ञानियों ने विभिन्न आबादी की अनुवांशिक संरचना का अध्ययन किया है और विभिन्न अनुवांशिक लक्षणों की जीन (एलील) आवृत्तियों को प्राप्त किया है। एक विशिष्ट समूह के सदस्यों के बीच एक अलग समूह के रूप में नामित करने और समानता को जानने के लिए कई अनुवांशिक लक्षणों पर विचार करना सबसे अच्छा तरीका होगा। वर्गीकरण के अध्ययन में शामिल अधिकांश विशेषताओं को आनुवंशिक रूप से निर्धारित किया जा सकता है और पर्यावरणीय परिस्थितियों में संशोधित किया जा सकता है लेकिन विशेष रूप से जैसे विभिन्न रक्त समूहों को जेनेटिक्स द्वारा निर्धारित नहीं किया जा सकता हैं।

अपनी प्रगति को जाचें

5) वर्णन करें कि क्यों मानव जाति के तीन प्रमुख समूहों में वर्तमान वर्गीकरण स्वेच्छिक है।

.....

.....

.....

6) मानवजाति के वर्गीकरण के लिए अनुवांशिक लक्षणों को क्यों प्राथमिकता दी जानी चाहिए

.....

.....

.....

7) क्या आपको लगता है कि भौगोलिक क्षेत्र किसी दिए गए नस्ल में समान समूहों को शामिल करने से प्रतिबंधित करता हैं

.....

.....

.....

11.3 सारांश

नस्ल के कुछ जैविक लक्षणों में विविधता को भौगोलिक पैटर्न के रूप में परिभाषित किया जाता है जो विभिन्न मानव आबादियों को अलग करती हैं और विविध रूप प्रदान करती हैं। मानव प्रजातियों के भीतर जैविक नस्ल के अस्तित्व की धारणा आमतौर पर सभी मानव आबादी को कुछ विशेषताओं के आधार पर सीमित संख्या में वर्गी त करने के प्रयास से जुड़ी है। मानव जाति को तीन प्रमुख समूहों, जैसे नीग्रोइड, काकेशॉयड और मंगोलॉयड में वर्गी त किया गया है। यह त्वचा के पिग्मेंटेशन, बालों का रंग-रूप और मात्रा, नाक के आकार, सिर और चेहरे, आंख, कद, उंगली और हथेली के प्रिंट आदि की विशेषताओं पर आधारित है। नेग्राइड समूह अफ्रीका और दुनिया के कुछ अन्य क्षेत्रों के विभिन्न हिस्सों में रहता है। उनकी त्वचा का रंग गहरा भूरा से काला तक होता है, सिर के बाल न जैसे और घुंघराले होते हैं, सिर का रूप अधिक लंबा होता है लेकिन कम चौड़ा होता है, नाक चौड़ी होती है और आकार में चपटी होती है, होंठ मोटे होते हैं और बहिर्वलित होते हैं और शरीर के बाल शरीर पर कम वितरित होते है। काकेशॉयड समूह यूरोप और मध्य एशिया और मध्य पूर्व के क्षेत्रों में रहता है। सिर के बाल आमतौर पर लहरदार लेकिन सीधे या कुछ हद तक घुंघराले होते हैं, त्वचा का रंग सफेद से भूरे रंग का हो सकता है, सिर का आकार पतले से चौड़े आकार की विविधता दिखाता है, पतली और नुकीली नाक, चेहरा सीधा है और उद्हनुता नहीं दिखाता है, गाल की ह ियां प्रमुखता से उभरी हुई नहीं होती हैं, होंठ आम तौर पर पतले होते हैं, माथे और ठोड़ी अपेक्षा त उन्नत होते हैं। मंगोलियाई समूह पूर्वी एशिया, जापान और दक्षिण पूर्व एशिया के क्षेत्रों में रहता है। त्वचा का रंग पीले रंग से भूरे रंग का होता है, मुख्य रूप से लघुशिरस्क (ब्राकिसिफैलिक) होते हैं, बालों का रंग काला और बालों की बनावट आम तौर पर सीधी होती हैं, गाल की ह ियां बहुत उन्नत होती हैं, परी पलक में त्वचा की एक परत होती है जिसे एपीकैन्थिक परत कहा जाता है, शरीर की सतह पर प्रति इकाई बाल घनत्व बहुत कम होता है।

हालांकि, मानव जाति का यह वर्गीकरण स्वेच्छिता और अपक्विता से ग्रस्त है, अनुवांशिक आधार संदिग्ध है, भौगोलिक वितरण एक सीमित कारक है और विभिन्न समूहों के बीच विशेषताओं का अतिच्छादन हो रहा है।

11.4 संदर्भ

एनीमोन, आर.एल. (2011*). रेस एंड ूमन डाइवर्सिटी: ए बायोकल्चरल अप्रोच, कोर्स स्मार्ट ई-टेक्स्टबुक.* रूटलेज.

कून, सी.एस., गार्न, एस.एम. एंड बर्डसेल, जे.बी. (1950). रेसेज. अ स्टडी ऑफ द प्रॉब्लम ऑफ रेस फॉर्मेशन इन मैन. चार्ल्स सी थॉमस, स्प्रिंगफील्ड, इलिनोइस.

दास, बी.एम. (2004).*आउटलाइन ऑफ फिजिकल एंथ्रोपोलॉजी* किताब महल, न्यू दिल्ली.

डेनिकर, जे. (1900).*द रेसेज ऑफ मैन* स्क्रिबनर्स, न्यूयॉर्क.

डोबजांस्की, टी. (1958). *इवोल्यूशन,जेनेटिक्स एंड मैन* जॉन विली एंड सन्स, न्यूयॉर्क.

फ्रैंको,एफ.सी.एम.,अराउजो, टी.एम.डी.,वोगेल,सी.जे.,एंड क्वाइंटाओ, सी.सी.ए.(2013). ब्रैकीसिफैलिक, डोलिकोसिफैलिक एंड मिजोसिफैलिक : इज इट एप्रोप्रिएट टू डिस्क्राइब द फेस यूजिंग स्कल पैटर्न्स : *डेंटल प्रेस जर्नल ऑफ ऑर्थोडोंटिक्स* 18(3), 159-163.

हूटन, ई.ए. (1946). *अप फ्रॉम द एप* मैकमिलन, न्यूयॉर्क.

केफर्ट, सी. (1961). *रेसेज ऑफ मैनकाइंड: देयर ओरिजिन एंड माइग्रेशन* पीटर ओवेन लिमिटेड, लंदन.

मोंटगु.ए. (2001). *मैन्स मोस्ट डेंजरेस मिथ: द फाल्सी ऑफ रेस*अल्तमिरा प्रेस. युनाइटेड स्टेट ऑफ अमेरिका.

सिंह, आई.पी. एंड भसीन, एम.के. (2004).*अ मैनुअल ऑफ बायोलॉजिकल एंथ्रोपोलॉजी* कमला-राज इंटरप्राइजेज, दिल्ली.

11.5 आपकी प्रगति की जांच के लिए उत्तर

1) नीग्रोइड नस्ल मुख्य रूप से उप-सहारा अफ्रीका में वितरित है। उनके पास बहुत ही अनोखी चेहरे की विशेषताएं हैं। नेग्रॉइड समूह का प्रतिनिधित्व मुख्य रूप से अफ्रीकी लोगों द्वारा किया जाता है। नीग्रोइड समूह की विशिष्ट विशेषताएं हैं :

त्वचा का रंग गाढ़े भूरे से काले रंग का होता है
सिर के बाल नी, मजबूत और घुंघराले होते हैं
सिर का आकार अधिक लंबा है लेकिन कम चौड़ा है
नाक चौड़े और चपटे आकार की होती है
होंठ मोटे और बहिर्वलित होते हैं एवं
बाल शरीर पर कम वितरित होता है (देखें भाग 11.1)।

2) नीग्रोइड समूह की त्वचा काली है जबकि मंगोलॉयड की पीली होती है। नीग्रोइड के होंठ मोटे और बहिर्वलित होते हैं जबकि मंगोलॉयड कि परी पलक में त्वचा की एक परत होती है जिसे एपीकैन्थिक परत कहा जाता है। नीग्रोइड के बाल नी या कसे हुए घुमावदार होते है जबकि मंगोलियाई लोगों के बाल कोमल और सीधे होते हैं। (देखें भाग 11.1 व 11.1.3)

3) इस दुनिया में रहने वाले सभी मनुष्य होमो सेपियंस एक नस्ल से संबंधित हैं। फिर भी बाहरी उपस्थिति के आधार पर वे एक-दूसरे से बहुत अलग दिखते हैं। हो सकता है कि यह त्वचा का रंग, नाक का आकार, आंखों का रंग, सिर का आकार या बाल के रूप और रंग अलग हो। मानव जाति के उपरोक्त वर्गीकरण को तीन प्रमुख समूहों और कई उप समूहों में बाटा जाता है लेकिन कई दोषों के कारण इन्हें अक्सर त्रुटिपूर्ण माना जाता है (विस्तृत विवरण के लिए भाग 11.2 देखें)

4) मंगोल जाति के लोग मुख्य रूप से एशिया-प्रशांत के भौगोलिक क्षेत्रों में निवास करते हैं, चीन और जापान दुनिया में इसके प्रमुख क्षेत्र है। (विस्तृत विवरण के लिए भाग 11.1.3 देखें)

5) मानवजाति के वर्गीकरण के इस तथ्य को स्वेच्छित और अपरिष्त रूप में संदर्भित किया जा सकता है कि यह स्पष्ट रूप से विशिष्ट विशेषताओं पर आधारित है। इन विशेषताओं में त्वचा का रंग, सिर, नाक और बाल आदि का आकार शामिल है। जिसमें अंतर्निहित अनुवांशिक संबंधों पर विचार नहीं किया गया है, इस प्रकार इस वर्गीकरण का आधार नहीं बनता है। मनुष्यों ने हमेशा भोजन और सुरक्षा की तलाश में प्रवसन

किया है। नस्लीय मिश्रण, विभिन्न समूहों के मिलने के साथ होता है, संभवतः यही जीनपूल और जीन आवृत्तियों में परिवर्तन का कारण बना हो। मानव समूह गतिशील होते हैं और अपने आवास को बदलते रहते हैं। जिसके अनुसार नस्लीय मिश्रण विभिन्न समूहों के गठन का कारण बन सकते हैं। संक्षेप में, यह निष्कर्ष निकालना तर्कसंगत है कि वर्तमान वर्गीकरण के आधार का मानदंड स्वेच्छिक और मनमाना रहा है (विस्तृत विवरण के लिए भाग 11.2 देखें)।

6) वर्तमान वर्गीकरण विभिन्न समूहों में मतभेदों के अनुवांशिक आधार पर विचार नहीं करता है। बेशक, मानवविज्ञानियों ने विभिन्न आबादी की अनुवांशिक संरचना का अध्ययन किया है और विभिन्न अनुवांशिक लक्षणों की जीन (एलील) आवृत्तियों को प्राप्त किया है। एक विशिष्ट समूह के सदस्यों के बीच एक अलग समूह के रूप में नामित करने के लिए और समानता को जानने के लिए कई अनुवांशिक लक्षणों पर विचार करना सबसे अच्छा तरीका होगा। वर्गीकरण के अध्ययन में शामिल अधिकांश विशेषताओं को आनुवंशिक रूप से निर्धारित किया जा सकता है और पर्यावरणीय परिस्थितियों में संशोधित किया जा सकता है लेकिन वे विशेष रूप से विभिन्न रक्त समूहों जैसे जेनेटिक्स द्वारा निर्धारित नहीं किए जाते हैं(विस्तृत विवरण के लिए भाग 11.2 देखें)।

7) मानव जाति के विभिन्न समूहों का वर्णन करने में भौगोलिक क्षेत्रों की निरंतरता इस वर्गीकरण का मुख्य आधार रहा है। हालांकि, कई अन्य विशेषताओं वाले लोगों को एक दूसरे से दूर कई क्षेत्रों में देखा जा सकता है। लेकिन इन्हें भौगोलिक दूरी के आधार पर उस समूह में शामिल नहीं किया जा सकता है (अधिक विवरण हेतु भाग 11.2 देखें)।

इकाई 12 नस्लों का वर्गीकरण *

इकाई की रूपरेखा

12.0 परिचय

12.1 जे. एफ. ब्लूमबेक का योगदान

12.2 ई. ए. ह न का योगदान

12.3 एच. एच. रिजले का योगदान

12.4 बी. एस. गुहा का योगदान

12.5 सारांश

12.6 संदर्भ

12.7 आपकी प्रगति जाचने के लिए उत्तर

अधिगम उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप निम्न करने में सक्षम होंगे :

¾ मानव जनसंख्या के वर्गीकरण के आधार को समझेंगे

¾ विभिन्न विद्वानों द्वारा दिए गए नस्लीय वर्गीकरण के बारे में जानेंगे तथा

¾ प्रमुख नस्लीय समूहों की विशेषताओं को समझेंगे।

12.0 परिचय

जीवविज्ञान में, विशेष रूप से वर्गिकीय वर्गीकरण के संबंध में नस्ल, उप-स्पीसीज के स्तर से नीचे एक अनौपचारिक श्रेणी है। इसलिए मानव नस्ल, मानव जनसख्या के समूहों में वर्गीकरण पर आधारित एक अवधारणा है। ये वर्गीकरण अनुमानित सामान्य वंशज के साथ साझा शारीरिक, आनुवांशिक, सामाजिक या सांस्कृतिक लक्षणों के आधार पर किए गए थे।

प्राचीन भारतीय जनसख्या को तीन अलग-अलग प्रकार की शारीरिक विशेषताओं के रूप में आसानी से पता लगाया जा सकता है। संस्कृत व साहित्य के अनुसार इन्हें तीन प्रकार के रूपों में वर्गीकृत किया गया है: हल्के रंग वाले इंडो-आर्य, पीले रंग के किरात (इंडो-मंगोलोइड्स) और काले रंग वाले निशाद (आस्ट्रेलियाड्स)। यहां तक कि प्राचीन चीनी साहित्यों में भी त्वचा के रंग के आधार पर मानव समूहों को अलग करने का प्रयास किया गया। हालांकि, 1684 में पुराने जगत की यात्रा के दौरान बर्नियर को मानव नस्ल को विभिन्न नस्लों में वर्गीकृत करने के प्रयास के संस्थापक के रूप में पहचाना जा सकता है।

1758 में, एक स्वीडिश वनस्पतिविद कैरोलस लिनिअस ने टैक्सोनोमिक वर्गीकरण की स्थापना की और मानव स्पीसीज के चार 'किस्मों' की पहचान की – होमो यूरोपीय, होमो अमेरिकन,

* प्रो. सुवीर बिस्वास, मानव विज्ञान विभाग, पश्चिम बंगाल राज्य विश्वविद्यालय, बरसात, कोलकाता

होमो एशियाटिक और होमो अफ्रीकी। इस वर्गीकरण में उन्होंने वंशागत जैविक गुणों और सीखे हुए सांस्कृतिक लक्षणों को आधार बनाया। आजकल विज्ञान में इस प्रकार के पूर्वाग्रह वर्गीकरणों को शामिल कर नृवंशिक धारणाओं को पहचाना जा सकता है। बाद में यूरोपीय विद्वानों ने होमो सेपियंस को शारीरिक विशेषताओं और सामान भौगोलिक क्षेत्रों के आधार पर सात विशिष्ट समूहों में विभाजित किया हैं - ऑस्ट्रेलियाई, काकेशॉयड, मंगोलॉयड, नेग्राइड, मूल अमेरिकियों और पॉलिनेशियन। यह इकाई ब्लूमेंबैक, हूटॉन, रिस्ले और गुहा जैसे विद्वानों द्वारा प्रस्तावित महत्वपूर्ण नस्लीय वर्गीकरण प्रणाली पर वर्णन करती है।

"रेस" शब्द का प्रयोग पहली बार 1684 में मानवता के एक प्रमुख विभाजन के समकालीन अर्थों में हुआ था, जो वंश परंपरा के माध्यम से प्रसारित शारीरिक गुणों का एक विशिष्ट संयोजन प्रदर्शित करता था। हालांकि, इस तरह के शब्द का उपयोग करने वाले पहले व्यक्ति फ्रैंकोइस बर्नीर थे जिन्होंने इस सवाल को संबोधित नहीं किया कि कैसे नस्ल मानव स्पीसीज से पूरी तरह से संबंधित थी। इमैनुअल कांट ने 1775 में ऑफ द डीफरेंट ूमन रेस नामक निबंध लिखा जिसके द्वारा उन्होंने बहुविध (पॉलीजेनेसिस) का मुकाबला किया और यह दिखाया कि नस्ल की अवधारणा यूरोपीय विद्वानों के लिए नए लोगों के बारे उपलब्ध अत्यधिक सामग्रियों का वर्गीकरण करने का एक महत्वपूर्ण तरीका मात्र है। कांट ने न केवल नस्ल और स्पीसीज के बीच एक स्पष्ट और निरंतर शब्दावली का भेद पाया, बल्कि पीढ़ियों में नस्लीय विशेषताओं की स्थायीता पर जोर दिया। दोनों विशेषताएं, इस दावे में योगदान देती हैं कि कांट ही नस्ल की एक कठोर वैज्ञानिक अवधारणा विकसित करने वाले पहले व्यक्ति थे ना कि जॉर्जेस-लुइस लेक्लेकर डी. बफन (बर्नास्कोनी और लॉट, 2000)।

अपनी प्रगति को जाचें

1) संस्कृत साहित्य के अनुसार प्राचीन भारतीय जनसख्या में विभिन्न प्रकार की शारीरिक विशेषताएं क्या हैं

.....

.....

.....

2) कैरोलस लिनिअस ने मानव स्पीसीज की कितनी किस्मों' की पहचान की थी

.....

.....

.....

12.1 जे. एफ. ब्लूमेंबैक का योगदान

जोहान फ्रेडरिक ब्लूमेंबैक (1752-1840) एक जर्मन चिकित्सक थे। 1775 में, 60 मानव कपालों का अध्ययन करने के बाद, उन्होंने मानव स्पीसीज को खोपड़ी के आकार के आधार पर पांच विशिष्ट नस्ल में विभाजित किया। उन्होंने माना कि होमो सेपियंस का एक ही स्थान पर उद्भव हुआ था और फिर वे दुनिया भर में विस्तारित हुए और जलवायु, पर्यावरण, विभिन्न जीवनशैली

और अधिग्रहित विशेषताओं के संचरण ने इन लोगों की विभिन्न नस्लों को आकार दिया था। ब्लूमेंबैक ने कोकेशियान' शब्द रचा , जो रूस और जॉर्जिया के बीच पर्वत श्रृंखला से निकला और उसके लिए आदर्श कपाल प्रकार कोकेशियान था और अन्य कपाल के प्रकार उसी के क्षरण के बाद बने हैं। उनका 1795 का वर्गीकरण उनके शिक्षक लिनिअस के वर्गीकरण के समान था, जिन्होंने अमेरिकी, यूरोपीय, एशियाई और अफ्रीकी चार प्रमुख श्रेणियों में नस्ल को विभाजित किया (चहल, 2011)। ब्लूमेंबैक द्वारा प्रस्तावित नस्लीय वर्गीकरण है :

1) कोकेशियान या श्वेत : यूरोप के लोग (लैपलैंडर्स और फिन को छोड़कर) उत्तरी अफ्रीका और पश्चिमी एशिया में भी गंगा तक पाए जाते हैं।

2) मंगोलियाई या पीले : यूरोप के फिन और लैपलैंडर्सय अमेरिका के एस्किमोस (अब इनयूट्स कहा जाता है), एशिया के निवासियों (कोकेशियन को छोड़कर)।

3) मालायान या ब्राउनः प्रशांत क्षेत्र के निवासी।

4) इथोपियन या

5) अफ्रीकी (काकेशियन के अतिरिक्त)

6) अमेरिकी या रेडः अमेरिका के लोग (एस्किमॉस को छोड़कर)।

ब्लूमेंबैक ने नस्लीय मूल के क्षरणीय परिकल्पन' के लिए तर्क दिया और दावा किया कि आदम और हव्वा कोकेशियान विशेषताओं के साथ एशिया के निवासी थे। अन्य नस्ल शायद सूर्य और आहार जैसे पर्यावरणीय कारकों के अपघटन के कारण उत्पन्न हुईं। इसलिए, ठंडी हवा की वजह से एस्किमो (अब इनयूट्स कहा जाता है) में कम पिगमेंटेशन और उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में सूरज की गर्मी की वजह से नेग्राइड में ज्यादा पिगमेंटेशन उत्पन्न हुआ। उन्होंने माना कि अन्य सभी रूप सूर्य और आहार के आधार पर कोकेशियान रूप में वापस आ सकते हैं। हालांकि, कोई भी ब्लूमेंबैक के क्षरणीय विचारों में वैज्ञानिक नस्लवाद ढूंढ सकता है, हालांकि ब्लूमेंबैक ने कभी भी एक नस्ल को दूसरे से बेहतर नहीं माना ।

12.2 ई. ए. ह न का योगदान

अर्नेस्ट अल्बर्ट ह न (1887-1954), एक यहूदी-अमेरिकी शारीरिक मानवविज्ञानी, नस्लीय वर्गीकरण और अपनी लोकप्रिय पुस्तक अप फ्रॉम द एप' के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने नस्ल (1946) को परिभाषित करते हुए मानव जाति का एक बड़ा भाग माना है और इसके सदस्य यद्यपि परस्पर भिन्न होते हैं, ऐसे लक्षण समूह युक्त होते हैं जिसे आकरकीय और मापीय विशेषताओं का मिश्रण कहा जाता है। मुख्य तौर पर ये विशेषताएं अनुकूलित नहीं होती और इन्हें सामान पूर्वज (वंश) से प्राप्त किया जाता है (हूटन, 1946)।

1931 में, ह न ने तीन प्राथमिक नस्लों जैसे काकेशॉयड, नेग्राइड और मंगोलोइड की कई समग्र उप-नस्लों के साथ पहचान की। हालांकि 1947 में, उन्होंने अपना वर्गीकरण संशोधित किया। ह न के मानवनस्ल का संशोधित वर्गीकरण (1947) निम्नलिखित है :

अ) काकेशॉयड

1) भूमध्यसागरीय

क) शास्त्रीय/पारंपरिक भूमध्यसागरीय

ख) अटलांटो भूमध्यसागरीय

ग) भारत-अफगानी

2) नॉर्डिक

3) अल्पाइन

4) बाल्टिक

5) दिनारिक

6) आर्मीनायड

7) केल्टिक

8) लैप

9) भारतीय-द्रविड़

10) पोलिनेशियन

11) ऐनु

ब) क) प्राचीन काकेशॉयड या ऑस्ट्रेलियाई (काकेशॉयड का उपखंड):

1) ऑस्ट्रेलियाई आदिवासी

2) पूर्व द्रविड़ या ऑस्ट्रेलियाई या वेद्दयाड

स) मंगोलॉयड

1) शास्त्रीय/पारंपरिक मंगोलॉयड

2) द आर्किक या एस्किमॉइड

3) इंडो-मलयान मंगोलॉयड

क) मलय टाइप

ख) इंडोनेशियाई टाइप या नेसियट

4) अमेरिंडियन या अमेरिकी इन्डियन

क) पेलियो-आर्मीनायड

ख) उत्तरी अमेरिंड

ग) नव-अमेरिंड

घ) तेहुकलेचे (Tchuelcche)

च) उत्तर-पश्चिम तट के अमेरिंड

द) निग्राइड

1) अफ्रीकी नेग्रो

क) वास्तविक नीग्रो

ख) नीलोटिक नीग्रो

ग) बंटू

घ) बुशमैन-हो ेन्टोट

च) नेग्रिलो (अफ्रीकी पायग्मी)

2) महासागरीय नीग्रो

क) निग्रिटो

ख) पापुआन और मेलानेशियन

3) अमेरिकी नीग्रो

आइए, अब हम लोग बाद के वर्गों में वर्णित प्रत्येक वर्गीकरण की विशेषताओं को सीखें।

अ) काकेशॉयड

काकेशॉयड नस्ल में नस्लीय तत्वों और लोगों के बीच सामान्यी त लक्षणों की एक श्रृंखला के साथ कई उप-समूह शामिल हैं। यह नस्ल आगे ग्यारह नस्लीय उप-प्रकारों अर्थात् भूमध्यसागरीय, नॉर्डिक, अल्पाइन, पूर्वी बाल्टिक, दिनारिक, आर्मेनॉयड, केल्टिक, लैप, इंडो-द्रविड़ियन, पोलेनेशियन और ऐनू में विभाजित है।

काकेशॉयड नस्ल की विशेष विशेषताएं इस प्रकार हैं:

- त्वचा के विभिन्न रंग जैसे सफेद, भूरे होते हैं, कभी-कभी गहरे भूरे रंग के होते हैं
- बाल घुंघराले, सीधे और लहरदार होते है, बालों का रंग हल्का है और बाल की बनावट ठीक होती है
- सिर का आकार दीर्घशिरस्क से लघुशिरस्क होता है
- नाक की अस्थि ची तथा नाक का रूप लम्बी नाक (लेप्टोराइन) से चपटी नाक (मेसोरहाइन) चौड़ीनाक (प्लैटिर्राइन) कभी नहीं होती है
- माथे ंचे है और चेहरे की उद्हनुता अनुपस्थित होती है
- उन्नत ठोड़ी के साथ पतले होंठ तथा
- आमतौर पर कद लंबा होता है।

काकेशॉयड नस्लीय उप-प्रकारों की महत्वपूर्ण भौतिक विशेषताएं हैं:

1) भूमध्यसागरीय: इनका नाम उनके मूल आवास, भूमध्यसागरीय तट के नाम पर रखा गया है। आम तौर पर, भूमध्यसागरीय लोगों के पास हल्का शरीर , गहरा रंग और पतला सिर होता है। उन्हें फिर से तीन श्रेणियों में वर्गी त किया जाता है। शास्त्रीय/पारंपरिक भूमध्यसागरीय, अटलांटो-भूमध्यसागरीय और भारत-अफगान।

   क) शास्त्रीय/पारंपरिक भूमध्यसागरीय: इस श्रेणी के लोगों के त्वचा के रंग हल्के भूरे, काले घुंघराले बाल, डॉलिकोसेफैलिक से मेसोसेफेलिक सिर, लेप्टोराहाइन नाक, नुकीले लंबे अंडाकार चेहरे, काली आंखें और मध्यम कद के लक्षण होते हैं।

ख) अटलांटो -भूमध्यसागरीय : इस नस्लीय उपप्रकार की शारीरिक विशेषताओं में काला रंग, गहरा, लहरदार या घुंघराले बाल, डॉलिकोसेफैलिक से मेसोसेफेलिक सिर, सीधी नाक, गहरे जबड़े, गाल की उन्नत हि यां, उन्नत कटक (brow ridges) के साथ ढालू माथे, मध्यम भूरी से गहरी भूरी आंख और कद लंबा होता है।

ग) इंडो -अफगानीः इंडो-अफगानी लोगों की त्वचा के रंग हल्का भूरा, काले और मोटे बाल, प्रचुर मात्रा में शरीर और चेहरे पर बाल, डॉलिकोसेफैलिक से मेसोसेफेलिक सिर, लेप्टोराहाइन नाक, लंबा और पतला चेहरा, और लंबे से मध्यम कद का होता है।

2) नॉर्डिकः नॉर्डिक लोगों की त्वचा सफेद रंग के, लाल बाल, मेसोसेफेलिक सिर, सीधे और लेप्टोराइन नाक, लंबे संकीर्ण और सीधे चेहरे, नीली या भूरी आंख, पतले होंठ और लंबे कद के साथ चेहरा लाल और गुलाबी रंग लिए रहता है।

3) अल्पाइनः अल्पाइन की मुख्य विशेषताओं में जैतून या बर्नेट जैसी सफेद त्वचा, लहरदार बाल, ब्रेकिससेफलिक सिर और लेप्टोराइनि से मेसोर्राइन तथा छोटी-मोटी मांसपेशियों वाली नोक वाली नाक को शामिल किया गया है। उनका चेहरा कठोर, उन्नत कटक (brow ridges) और उन्नत ठोड़ी के साथ अंडाकार होता है। उनके पास मोटे होंठ के साथ मध्यम भूरे रंग की आंखें होती हैं। कद मध्यम से छोटा होता है ।

4) पूर्वी बाल्टिकः इस नस्लीय प्रकार में मलाई के जैसी सफेद त्वचा , सीधे बाल और हल्के नीले या भूरे रंग की आंखें होती हैं। उनके शरीर पर कम बाल और चेहरे पर मध्यम बाल होते हैं। इनका सिर ब्रेकिससेफलिक और चेहरे का आकार चौकोर होता है। ये उत्तल नाक प्रोफाइल के साथ मेसोराईनी होते हैं। मध्यम से पतले होंठ के साथ इनके पास उन्नत गाल होते है। इनका कद छोटे से मध्यम होता है।

5) दिनारिकः दिनारिक नस्ल की विशिष्ट विशेषताओं में जैतून के रंग की त्वचा, मध्यम बाल बनावट, प्रचुर मात्रा में शरीर और चेहरे पर बाल, ब्रेकिससेफलिक सिर, मांसल नोक वाली और उच्च नाक की जड़ के साथ लेप्टोर्राइन नाक शामिल है। अन्य महत्वपूर्ण विशेषताओं में भूरे रंग कि आंख , मोटे होंठ, लंबा कद और लंबी और प्रसंस् त ठोड़ी के साथ लंबे और पतले चेहरे शामिल हैं।

6) आर्मेनॉयडः आर्मेनॉयड नस्ल में सफेद या जैतून के रंग की त्वचा, काले भूरे से काले रंग वाले बाल, शरीर और चेहरे पर प्रचुर मात्रा में बाल, ब्रेकिससेफलिक सिर, उत्तल प्रोफाइल के साथ लेप्टोर्राइन नाक, अच्छी तरह से विकसित गाल की ह ी के साथ पतले चेहरे होते हैं । उनके पास मध्यम भूरे से भूरे रंग की आखें होती हैं, मध्यम मोटे होंठ और आंखों के किनारे मोटे होते हैं। कद मध्यम से लंबा होता है।

7) केल्टिकः इस नस्ल के लोगों में पीला सफेद त्वचा का रंग, घुंघराले बाल, मेसोसेफेलिक सिर, नीली या भूरी आंखें और गहरे ठोड़ी, लंबे और पतले चेहरे के साथ लहरदार बाल होते हैं। इनके पास उच्च नाक अस्थियां के साथ लेप्टोराइन नाक है। इनका कद आमतौर पर लंबा होता है।

8) लैपः लैप नस्ल की मुख्य विशेषताएं : ग्रेइस पीले से पीले रंग की त्वचा, काले सीधे बाल, स्पैस शरीर और चेहरे पर बिखरे बाल, ब्रेकिसेफलिक सिर, मोटे होंठ और अवतल

प्रोफाइल के साथ मेसोर्राइन नाक। इनका चेहरा मामूली रूप से चौड़ा लेकिन बहुत छोटा है। इनके पास उन्नत गाल की ह ियां और विकसित आंखों के किनारे हैं। एपीकेनथिक फोल्ड कभी-कभी मौजूद होता है। कद छोटा होता है।

9. इंडो-द्रविड़ियन : इंडो-द्रविड़ियन नस्ल की महत्वपूर्ण शारीरिक विशेषताओं में हल्के भूरे से भूरे रंग कि त्वचा, भरपूर काले रंग के बाल, गहरे भूरे रंग की आंख और डॉलिकोसेफलिक सिर शामिल हैं। उनके पास थोड़ा सा उद्हनुता के साथ मध्यम लंबा चेहरा है। इनकी नाक सीधे प्रोफाइल के साथ मेसोरिन हैं। इनका नाक अस्थियां धसीं हुई जड़ के साथ उच्च है। कद मध्यम है।

10. पॉलिनेशियनः इस श्रेणी के लोगों में हल्के भूरे रंग से पीले भूरे रंग की त्वचा होती है, सीधे लहरदार, काले भूरे से काले रंग वाले बाल, शरीर और चेहरे पर बिखरे बाल, मध्यम भूरे से काले रंग की आंखें, मोटे होंठ और ब्रेकिसेफलिक सिर। इनके पास उन्नत गाल की ह ियों के साथ लंबा और चौड़ा चेहरा है। नाक उन्नत अस्थियों के साथ मेसोराइन है। ठु ी अच्छी तरह से विकसित है। औसत से लम्बी ंचाई है।

11. ऐनूः इनके पास हल्के भूरे-भूरे, सफेद, काले भूरे से काले रंगों वाले बाल, मेसोसेफेलिक सिर, मेसोरहाइन से प्लेटिएरिन उत्तल प्रोफाइल के साथ नाक है। अच्छी तरह से विकसित जबड़े और ठोड़ी के साथ उनका चेहरा चौड़ा और छोटा है। अन्य सुविधाओं में मध्यम भूरे से गहरे भूरे रंग की आंखें, पतले होंठ और मध्यम से छोटा कद शामिल हैं।

12) **I** ए) ऑस्ट्रेलियाई या प्राचीन काकेशॉयड पहले उल्लेख किए गए काकेशॉयड का उपखंड है। वे निम्नलिखित उपप्रकारों में विभाजित हैंः

1) ऑस्ट्रेलियाई आदिवासीः इनके पास मध्यम भूरे से काले चॉकलेट भूरे रंग की त्वचा होती है, घुंघराले लहरदार बाल, शरीर और चेहरे पर प्रचुर मात्रा में बाल, डॉलीकोसेफेलिक सिर, बड़ी आंखों के साथ बड़े भ्रू-कटक, ढालू ठु ी और मध्यम से स्पष्ट उद्हनुता के साथ छोटा चेहरा होता है। उन्नत ग्लैबेला के साथ माथे भी ढालू है। इसके अलावा, इनके पास बहुत चौड़ी नाक (प्लेटिरिहाइन्स), स्पष्ट रूप से धसीं हुई नासिका जड़, मध्यम से गहरे भूरे रंग की आंख और मध्यम मोटे होंठ होते हैं। कद में विविधता होती है।

2) प्री-द्रविड़ियनः प्री-द्रविड़ियन नस्ल की शारीरिक विशेषताओं में काले भूरे से काले रंग की त्वचा, काले घुंघराले बाल, डोलिकोसेफलिक सिर, प्लैटिर्राइन नाक, धसीं हुई नाक की जड़, मध्यम उद्हनुता के साथ छोटे और पतले चेहरे, पउन्नत भौं के किनारे, ढालू ठोड़ी, गहरे भूरे रंग की आंखें, मोटे होंठ और छोटे कद शामिल हैं ।

II) मोंगोलॉइड

मोंगोलोइड का उद्भव शायद एशिया के मध्य भाग में हुआ है और तदुपरांत वे विभिन्न दिशाओं में चले गए है। ये मुख्य रूप से भौगोलिक वितरण के आधार पर चार उप-विभाजनों में विभाजित हैं। ये उप-विभाजन हैः

1) शास्त्रीय/पारंपरिक मंगोलॉयड

2) द आर्किक या एस्किमॉइड

3. इंडो-मलयान मंगोलॉयड
4. अमेरिंडियन या अमेरिकी इन्डियन

मंगोलोइड नस्ल की महत्वपूर्ण विशेषताएं निम्नानुसार हैं :

- z पीला या पीला भूरा त्वचा का रंग
- z सिर के बाल सीधे
- z शरीर और चेहरे के बाल अल्प
- z ब्रैकीसेफलिक सिर
- z नाक की जड़ और नाक अस्थि कम गहरी
- z नाक प्रोफाइल अवतल या सीधी
- z उन्नत गाल की ह ियों के साथ चौडा और सपाट चेहरा
- z छोटी तिरछी आंखें
- z आखों की उपरी पलक के पर विशेष एपिकेंथिक परत और
- z विविध कद।

मंगोलॉयड उप-नस्लीय प्रकारों की महत्वपूर्ण भौतिक विशेषताएं हैं:

1) शास्त्रीय/पारम्परिक मंगोलॉयड : इस नस्ल के लोग पीले या भूरे रंग की त्वचा वाले, सीधे, मोटे और काले सिर के बाल वाले होते हैं। शरीर और चेहरे पर अल्प रूप से वितरित बाल, ब्रेकिसेफलिक सिर, कम धसी नाक की जड़, मध्यम, अवतल या सीध ी नाक की प्रोफाइल, चौकोर जबड़े के साथ चौड़ा चेहरा, विकसित गाल ह ियों, आंशिक रूप से तिरछी आखें, आखों की उपरी पलक के पर विशेष एपिकेंथिक परत और कद में विविधता होती है।

2) द आर्किक या एस्किमॉइड : इस नस्ल की शारीरिक विशेषताओं में कभी-कभी पूर्ण एपिकेंथिक परत के साथ काले, पीले से भूरे रंग की त्वचा, सीधे और काले बाल, शरीर और चेहरे पर कम बाल और काली आंखें शामिल हैं। सिर ब्रैकिसफेलिक से मौसोसेफैलिक होता है। नाक पतली और उन्नत है। चेहरे की ह ियां उन्नत तथा उनका चेहरा बड़ा और चौड़ा है। कद छोटा लेकिन विविधता युक्त होता है।

3) इंडोनेशियाई -मलय मंगोलॉयड : इंडोनेशियाई-मलय मंगोलॉयड में काकेशॉयड और नेग्राइड तत्वों का मिश्रण है। वे पूरे दक्षिण एशिया में बिखरे हुए हैं और दो प्रकार में विभाजित हैं : (ए) मलय प्रकार और (बी) इंडोनेशियाई प्रकार या नेसियट।

   क) मलय टाइपः इनकी त्वचा के रंग हल्के पीले से भूरे होते हैं। अन्य लक्षणों में सीधे काले बाल, ब्रेकिसेफलिक हेड, मेसोरहाइन से प्लैटिर्राइन नाक, मध्यम भूरे से काले भूरे रंग की आंख, आंतरिक एपिकेंथिक परत और कम धसीं नेसल बोन (नाक की ह ी) होती है। उन्नत गाल की ह ियों के साथ छोटा और व्यापक चेहरा । कद छोटा है।

   ख) इंडोनेशियाई प्रकार या नेसियट : इस नस्लीय प्रकार की विशेष विशेषताएं : हल्के लाल भूरे रंग से मध्यम भूरे रंग की त्वचा , काले बाल, मिसोसेफेलिक सिर,

मेसोरहाइन नाक, पतला लंबा और अंडाकार चेहरा, काली आंखें, कम निरंतर एपिकेंथिक परत, मोटे होंठ और छोटा कद।

4) अमेरिंडियन या अमेरिकी इन्डियन : अमेरिंडियन की विशेषताओं में पीले भूरे. लाल भूरे रंग की त्वचा, सीधे, मोटे और काले बाल, शरीर और चेहरे के बाल डॉलिको-मेसोसेफेलिक या ब्रेकीसेफेलिक सिर, लंबी लेकिन मेसोरिन नाक और उन्नत के साथ चौड़ा चेहरा सम्मिलित होता है, गाल कि हि यों अन्य महत्वपूर्ण विशेषताओं में उन्नत और उत्तल नाक अस्थि, ढालू माथे , दृढ़ता से विकसित आंखों के किनारे और ग्लैबेला, उन्नत ठोड़ी, फावड़े जैसे इन्सीजर और काले भूरे से भूरे रंग की आखें है। चेहरे में मध यम उद्हनुता। बाहरी एपिकेंथिक परत सामान्य। कद में विवधता ।

इस समूह को निम्नलिखित पांच श्रेणियों में विभाजित किया गया है:

क) पेलियो - आर्मीनायड या डोलिको -मीसोसेफल : पेलियो-आर्मीनायड में डोलिकोसेफलिक सिर, छोटी खोपड़ी लेकिन उच्च वॉल्ट, लंबे पतले चेहरे, लाल भूरे से भूरे रंग की त्वचा और काले और घने बाल होते हैं।

ख) उत्तरी अमेरिंड : इस नस्लीय उप-प्रकार की शारीरिक विशेषताओं में पीले से भूरे रंग की त्वचा, काले और सीधे बाल, डॉलिकोसेफलिक या मेसोसेफलिक सिर, मेसोरहाइन नाक, अंडाकार चेहरा, बाहरी एपिकेंथिक परत और लंबे कद के साथ मध्यम से गहरे भूरे रंग की आंख शामिल हैं।

ग) नव-अमेरिंड : ब्रैकिसेफल की महत्वपूर्ण विशेषताएं : पीले से भूरे रंग की त्वचा, काले सीधे बाल, ब्रैकिसफेलिक सिर, मेसोरहाइन नाक, चौड़ा और छोटा चेहरा, बाहरी एपिकेंथिक परत और विविध कद के साथ काली आंखें हैं।

घ) तेहुकलेचे (**Tehucleche**) : तेहुकलेचे लोगों में त्वचा का रंग ब्राउनिश, काला और सीधा बाल, ब्रेकिससेफलिक सिर, सीधे प्रोफाइल के साथ मेसोरहाइन नाक, चौकोर और चौड़ा चहेरा, बाहरी एपिकेंथिक परत के साथ काली आंखें और लंबा कद है।

) उत्तर-पश्चिम तट के अमेरिंड : अमेरिंड लंबी बांह और छोटे शारीर के साथ मध्यम कद वाले होते हैं। उनकी त्वचा का रंग और बालों का रंग अन्य प्रकारों की तुलना में हल्का है ।

III नेग्राइड

नेग्राइड नस्ल मुख्य रूप से उप-सहारा अफ्रीका में वितरित है। उनके पास बहुत ही अद्वितीय शारीरिक विशेषताएं हैं। इस नस्ल को आगे तीन नस्लीय उप-प्रकारों में विभाजित किया गया है :

1) अफ्रीकी नीग्रो

2) महासागरीय नीग्रो और

3) अमेरिकी नीग्रो ।

नेग्राइड नस्ल को निम्नलिखित विशेषताओं द्वारा पहचाना जाता है:

z काले भूरे से काले रंग की त्वचा,

- काले नी या घुंघराले बाल,
- शरीर और चेहरे के बाल दुर्लभ,
- ओक्सिपुट अस्थि बाहर की ओर उन्मुख, डालिकोसेफेलिक सिर,
- चौड़े और चपटे नाक,
- कम धंसी नाक की जड़ और नाक की अस्थि,
- चेहरे में उद्हनुता,
- आंखों के किनारे छोटे,
- गहरे भूरे से काले रंग की आंख,
- घुमावदार हेलिक्स के साथ कान का आकार छोटा और चौड़ा,
- मोटे और बहिर्वलित होंठ और
- कद में विविधता।

नेग्राइड उप-नस्लीय प्रकारों की महत्वपूर्ण शारीरिक विशेषताएं हैं :

1) अफ्रीकी नीग्रो के पांच उपखंड निम्नानुसार हैं :

   क) वास्तविक नीग्रो : इस उप प्रकार के लोग काले भूरे से काले त्वचा वाले, काले न जैसे बाल, डॉलिकोसेफेलिक सिर, प्लैटिर्राइन नाक, चहेरे में उद्हनुता, गहरे भूरे से काले रंग की आंखें, मोटे और बहिर्वलित होंठ और लंबे कद के रूप में चित्रित होते हैं।

   ख) नीलोटिक नीग्रो या नीलोट्स : निलोटिक नीग्रो की शारीरिक विशेषताओं में काले रंग कि त्वचा, काले न जैसे बाल, डॉलीकोसेफलिक सिर, कम धसीं नाक अस्थि के साथ प्लैटिर्राइन नाक, चेहरे में उद्हनुता के साथ छोटा चेहरा, माथे ढालू, अच्छी तरह से विकसित ठोढ़ी, गाढ़े भूरे रंग की आंख, मोटे और बहिर्वलित होंठ और लंबा कद है।

   ग) बंटू : बंटू लोग गाढ़े चॉकलेट जैसी त्वचा के रंग वाले, काले न जैसे घुघराले बाल, डॉलीकोसेफेलिक सिर, पतली और उन्नत नाक, उन्नत उद्हनुता, गहरे भूरे रंग की आंखें और औसत से पर तथा औसत कद वाले होते हैं।

   घ) बुशमैन -होटेंटोट : इस नस्ल में हल्के भूरे से पीले रंग, काले और मकई जैसे बाल, अल्प रूप से वितरित शरीर और चेहरे के बाल, डॉलिकोसेफलिक सिर, प्लैटिर्राइन नाक बहुत चौड़ी और चपटी नाक की जड़ और अवतल नाक प्रोफाइल प्रमुख विशेषताए है। चेहरा उन्नत गाल की ह ियों के साथ छोटा और चौकोर है। अन्य चेहरे की विशेषताओं में मोटे होंठ, छोटी ठोड़ी, गहरे भूरे से काले रंग की आंखें और परलिका हीन कान शामिल हैं। माथे थोड़े विकसित, आंखों के किनारे गोलाकार उभार लिए हुए। कद मध्यम। महिलाओं में उन्नत मांसल कूल्हा (Steatopygia) होता है।

ई) नेग्रिलो (अफ्रीकी पिग्मी): इस श्रेणी के लोगों में पीले से हल्के भूरे रंग की त्वचा, छोटे न या मक्के जैसे बाल, मोनोसेफेलिक सिर, चौड़ी और चपटी नाक, पतली ठु ी, गहरे भूरे रंग की आंख, पूर्ण होंठ के साथ उद्हनुता युक्त चेहरा और छोटा कद होता है।

2) महासागरीय नीग्रो : ये मुख्य रूप से न्यू गिएना और पड़ोसी द्वीपों में वितरित है। इस नस्लीय प्रकार को दो उप-प्रकारों में विभाजित किया गया है:

क) नेग्रिटो: नेग्रिटो लोगों की हल्के भूरे से काले चॉकलेट भूरे रंग की त्वचा, डॉलिकोसेफैलिक से मेसोसेफेलिक सिर, छोटी और सीधी नाक, गोल चेहरे और छोटे कद प्रमुख विशेषताएं है। इसके दो उप-प्रकार हैं यानी एशियाटिक पिग्मी और महासागरीय पिग्मी।

ख) पापुआन और मेलानेशियन: इस नस्लीय उपप्रकार की शारीरिक विशेषताओं में गाढ़ी चॉकलेट ब्राउन त्वचा का रंग, काले चमकीले बाल, डॉलीकोसेफेलिक सिर, प्लैटिर्राइन नाक, उन्नत भौं के किनारें, काले भूरे से काले रंग वाली आंख और छोटे से मध्यम कद शामिल हैं।

3) अमेरिकी नीग्रा: इनकी त्वचा गहरे भूरे रंग की, बाल न के सामान और काले भूरे रंग वाले, सिर डॉलिकोसेफलिक और हल्के भूरे से भूरे रंग की आंख होती है। चेहरा, थोडी सी उद्हनुता के साथ (कुछ हद तक लंबा) होता है। होंठ मध्यम या मोटे हैं। नाक नीग्रो और काकेशॉयड के बीच मध्यवर्ती हैं। कद में विविधता लेकिन आमतौर पर लंबे होते हैं।

अपनी प्रगति को जाचें

3) नस्लीय उत्पत्ति की अपरिवर्तनीय परिकल्पना का क्या अर्थ है

.....

.....

.....

.....

4) अप फ्रॉम द एप' किताब के लेखक कौन है

.....

.....

.....

.....

5) ह न द्वारा दिए मानवजाति के संशोधित वर्गीकरण की विशेषताएं लिखें।

.....

.....

.....

6) नीग्रॉइड नस्ल की महत्वपूर्ण विशेषताओं को लिखें।

.....

.....

.....

भारतीय परिदृश्य

बीसवीं शताब्दी के मानवविज्ञानियों ने भारतीय जनसंख्या को विभिन्न नस्लीय समूहों में वर्गी त करने का प्रयास किया। उनमें से रिजले, ग्लूफिडा-रग्गेरी, हैडॉन, ईक्स्टेड, गुहा और सरकार द्वारा प्रस्तावित नस्लीय वर्गीकरण महत्वपूर्ण हैं। इस खंड में हम सर एच. एच. रिजले और बी. एस. गुहा के नस्लीय वर्गीकरण में योगदान सीखेंगे।

12.3 एच. एच. रिजले का योगदान

1915 में सर हर्बर्ट होप रिजले ने मानव जनसंख्या को मानवमितीय माप के आधार पर वर्गी त करने की कोशिश की। रिजले के मुताबिक, भारत के तीन प्रमुख नस्लीय प्रकार द्राविड़, इंडो-आर्य और मंगोलॉयड हैं। अन्य नस्लीय प्रकार अलग-अलग अंशों में इन तीनों के मिश्रण क' की पहचान की।

1. द्राविड़
2. इंडो-आर्यन
3. मंगोलॉयड
4. आर्यो-द्राविड़ियन
5. मंगोलो-द्राविड़ियन
6. सिथो-द्राविड़ियन
7. तुर्को-ईरानी

1. द्राविड़

शारीरिक विशेषता: कद छोटा या मध्यमय, रंग काला से काले रंग के करीब, मात्रा में भरपूर व घुमावदार, आंख का रंग भी काला, सिर लंबा और नाक बहुत चौड़ी, कभी-कभी नाक की जड़ धसीं हुई होती है ।

वितरण: सियालोन (श्रीलंका) से भारत के दक्षिणी भाग, पश्चिमी बंगाल, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश (हैदराबाद), मध्य भारत और छोटा नागपुर की गंगा की घाटी तक।

उदाहरण : मलाबार (दक्षिण भारत) के पनिया और छोटा नागपुर के संथाल ।

2. इंडो -आर्यन

शारीरिक विशेषताएं गोरा रंग, काली आंख, शरीर पर भरपूर बाल के साथ लंबा चेहरा, मुख्य रूप से पतली और लंबी (लेप्टोराइन) नाक के साथ डॉलिकोसेफलिक सर।

वितरणः मुख्य रूप से पंजाब, राजस्थान और कश्मीर।

उदाहरणः कश्मीरी ब्रा ण, राजपूत, जाट और खत्री।

3) मंगोलॉयड

शारीरिक विशेषताएंः चौड़े -सिर, पीलेपन के साथ त्वचा का काला रंग, चेहरे और शरीर पर कम बाल, कद आमतौर पर मध्यम या निम्न मध्यम होता है, नाक चौड़ाई की एक विस्तृत श्रृंखला दिखाती है, चेहरा सपाट होता है और आंखें एपिकेंथिक परत के साथ तिरछी होती हैं।

वितरणः हिमालयी क्षेत्र, विशेष रूप से उत्तर पूर्व फ्रंटियर, नेपाल और बर्मा।

उदाहरणः लाहुल और कुल्लू घाटी के कानेट, दार्जिलिंग और सिक्किम के लेपचा, नेपाल के लिंबस, मुर्मिस और गुरुंगसय असम के बोडो

4) आर्यो -द्रविड़ियन

शारीरिक विशेषताए मध्यम आकार की ओर उन्मुखता के साथ लंबा सिर, त्वचा का रंग हल्के भूरे से काला, मध्यम और चौड़ी नाक। वे इंडो-आर्यों की तुलना में छोटे हैं जो आमतौर पर औसत ंचाई से कम होते हैं।

वितरण : उत्तर प्रदेश, राजस्थान और बिहार के कुछ हिस्सों में।

उदाहरणः उपरोक्त क्षेत्रों में निवास करने वाले।

5) मंगोलो -द्राविड़ियन

शारीरिक विशेषताएंः मध्यम चौड़े और गोल सिर के साथ , चेहरे पर भरपूर मात्रा में काले रंग के बाल, समतलता की प्रवृत्ति के साथ मध्यम नाक । कद भी मध्यम , लेकिन कभी-कभी छोटा होता है।

वितरणःा बंगाल और उड़ीसा।

उदाहरणः बंगाली ब्रा ण और बंगाली कायस्थ।

6) सिथो -द्राविड़ियन

शारीरिक विशेषताए : मध्यम से चौड़े सिर, छोटे से मध्यम कद, गोरा रंग, मामूली नाक, चेहरे और शरीर पर कम बाल।

वितरणः पश्चिमी भारत-मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र-गुजरात के सीमा क्षेत्र से कूर्ग तक।

उदाहरणः मराठा ब्रा ण, कुनबी और कूर्ग।

7) तुर्को -ईरानी

शारीरिक विशेषताएंः चौड़े सिर और मध्यम नाक, लंबा कद, गहरी और भूरे रंग की आंखें। त्वचा का रंग आम तौर गोरा पर चेहरे और शरीर पर उचित और भरपूर बाल पाए जाते हैं।

वितरण: अफगानिस्तान, बलूचिस्तान और नॉर्थवेस्ट फ्रंटियर प्रांत (अब पाकिस्तान में)।

उदाहरण: बलूचिस, ब्राहई, अफगानी और उत्तर पश्चिम फ्रंटियर प्रांत के अन्य लोग।

अपनी प्रगति को जाचें

7) एच एच रिजले द्वारा कितने शारीरिक और नस्लीय प्रकार की पहचान की गई

.....

.....

.....

8) भारतीय मंगोलोइड नस्ल की महत्वपूर्ण शारीरिक विशेषताएं क्या हैं तीन उदाहरण दें।

.....

.....

.....

9) भारत में द्रविड़ नस्ल के वितरण को लिखें।

.....

.....

.....

12.4 बी. एस. गुहा का योगदान

बिरजा शंकर गुहा (1894-1961), एक भारतीय शारीरिक मानवविज्ञानी थे जिन्होंने भारतीय जनसंख्या को कई प्रकार या नस्ल में वर्गी त किया। गुहा का वर्गीकरण मुख्य रूप से 1930 और 1933 के बीच किए गए मानवमितीय माप पर आधारित था। उन्होंने छह प्रमुख नस्लीय प्रकार और नौ उप-प्रकारों का पता लगाया।

1) नेग्रिटो

2) प्रोटो-ऑस्ट्रेलॉयड

3) मंगोलॉयड

   क) पेलियो-मंगोलॉयड

      i) लंबे सिर वाले

      ii) चौड़े सिर वाले

   ख) तिब्बती-मंगोलॉयड

4) भूमध्यसागरीय

   क) पेलियो-भूमध्यसागरीय

ख) भूमध्यसागरीय

ग) ओरिएंटल

5) पश्चिमी ब्रैकिसफल्स

क) अल्पानॉयड

ख) आर्मेनॉयड

ग) दिनारिक

6) नॉर्डिक्स

1) नेग्रिटो

शारीरिक विशेषताएं गाढ़ी त्वचा का रंग, छोटा कद, हल्के,घुंघराले बाल, सिर छोटे, मध्यम, या लंबे, बड़े गोलाकार माथे, नाक चपटी और चौड़ी , होंठ बहिर्वलित और मोटे होते हैं।

उदाहरण: दक्षिण भारत के कदार, इरुलास, पुनियंसय और राजमहल पहाड़ियों में रहने वाले आदिवासी।

2) प्रोटो -ऑस्ट्रेलॉयड

शारीरिक विशेषताएं : डोलकोसेफेलिक सिर, चौड़ी और चपटी नाक (प्लैटिर्राइन), नासिका जड़ धसीं, छोटा कद, गहरे भूरे से लगभग काले त्वचा के रंग, लहरदार या घुंघराले बाल, उन्नत सुपररार्बिटल रेजेज के साथ।

उदाहरण : छोटा नगपुर क्षेत्र के ओरांव, संथाल और मुंडाय दक्षिणी भारत के चेंचु, कुरुम्बास, यरूवस और बदागास, मध्य और पश्चिमी भारत के कोल और भील।

3) मंगोलॉयड

शारीरिक विशेषताएं चेहरे और शरीर पर कम बाल, आंशिक रूप से एपिकेंथिक परत के साथ तिरछी आखें ,उन्नत गाल की अस्थियां और सीधे बाल के साथ चपटे चेहरे ।

उपविभाग: मंगोलोइड नस्ल को फिर से दो उप-समूहों में बांटा गया है, जैसे पैलेओ-मंगोलॉयड और तिब्बती-मंगोलॉय।

क) पेलियो-मंगोलॉयड - ये लंबे सिर वाले और चौड़े सिर वाले के रूप में आगे विभाजित हैं।

i) लंबे सिर वाले - लंबे सिर, मध्यम कद, मध्यम नाक, उन्नत गाल की अस्थियां, हल्के भूरे रंग की त्वचा और छोटे और सपाट चेहरे।

वितरण : उप-हिमालयी क्षेत्रय असम और बर्मा फ्रंटियर में अधिक ।

उदाहरण : असम के सेमा नागा और नेपाल के लिंबस।

ii) चौड़े सिर वाले- चौड़े सिर, गोल चेहरे, काले रंग और मध्यम नाक के साथ, मुख्य रूप से उन्नत एपिकैन्थिक परत के साथ आंखें तिरछी ।

उदाहरण: च गांग के पहाड़ी जनजाति (चकमा, मॉघ)।

ख) तिब्बती-मंगोलॉयड: उनकी शारीरिक विशेषताओं में चौड़े और बड़े सिर, लंबा कद, लंबा और सपाट चेहरा, मध्यम से लंबी नाक, विशिष्ट एपिकैन्थिक परत, हल्के भूरे रंग की त्वचा, छोटे शरीर और चेहरे के बाल के साथ तिरछी आंखें सम्मिलित है।

उदाहरण: भूटान और सिक्किम के तिब्बती।

4) भूमध्यसागरीय : इस नस्लीय प्रकार को निम्नलिखित तीन नस्लीय उप प्रकारों में विभाजित किया गया है :

क) पेलियो -भूमध्यसागरीय

शारीरिक विशेषताएं : बल्बस माथे के साथ लंबे सिर, उच्च वाल्ट, मध्यम कद, छोटी और चौड़ी नाक, पतला चेहरा, नुकीली ठोड़ी, चेहरे और शरीर पर छोटे बाल के साथ काली त्वचा और बाहर की ओर उन्मुख ओक्सीपुट।

उदाहरण : दक्षिण भारत के द्राविड़ बोलने वाले लोग विशेष रूप से मदुरई के तमिल ब्रा ण, कोचीन के नायर, और तेलुगू ब्रा ण।

ख) भूमध्यसागरीय

शारीरिक विशेषता: आर्च (उभरे) माथे और अच्छी तरह से विकसित ठोड़ी, पतली नाक, मध्यम से लंबा कद और हल्की त्वचा की रंग, काले बाल के साथ लंबा सिर, भूरे रंग से गाढे रंग की आंखें, चेहरे और शरीर पर भरपूर बाल।

वितरण: उत्तर प्रदेश, मुम्बई, बंगाल, मलाबार।

उदाहरण : कोचीन के नुंबुदिरी ब्रा ण, इलाहाबाद के ब्रा ण और बंगाली ब्रा ण।

ग) ओरिएंटल

शारीरिक विशेषताएं: नाक जो लंबी और उत्तल है को छोड़कर लगभग सभी शारीरिक विशेषताओं में भूमध्यसागरीय के साथ समानता।

उदाहरण : पंजाबी क्षत्री, राजपूताना के बेनिया और पठान।

5) पश्चिमी ब्रैकिसफल्स: इन्हें तीन श्रेणियों में वर्गी त किया जाता है :

क) *अल्पेनॉयड*

शारीरिक विशेषताएं: मध्यम कद, गोलाकार ओक्सीपूट, उन्नत नाक और गोल चेहरे के साथ चौड़े सिर, चेहरे और शरीर पर प्रचुर मात्रा में बाल और हल्के रंग की त्वचा।

उदाहरणः गुजरात के बनिया, कथियावाड की काथी और बंगाल के कायस्थ।

ख) दीनारिक

शारीरिक विशेषताएं: चौड़े सिर, गोलाकार ओक्सीपुट और उच्च वॉल्ट, नाक बहुत लंबी और अक्सर उत्तल, लंबा चेहरा, गहरा त्वचा का रंग, आंखें और बालों के रंग भी काले और लंबा कद।

वितरणः बंगाल, उड़ीसा और कूर्ग

उदाहरणः बंगाल और मैसूर के ब्रा ण

ग) आर्मेनॉयड

शारीरिक विशेषताएं दिनारिक के रूप में कम या ज्यादा शारीरिक समानता, हालांकि, दिनारिक के बीच ओसीपूट का आकार बहुत विकसित होता है और नाक बहुत उन्नत होती है।

उदाहरणः बॉम्बे के पारसी। बंगाली वैद्य और कायस्थ कभी-कभी आर्मेनॉयड की विशेषताओं को दिखाते हैं।

6. नॉर्डिक्स

शारीरिक विशेषताएं: लंबे सिर, बाहर की ओर उन्मुख ओक्सीपूट और आर्च (उभरे) माथे, उच्च नासिका अस्थि के साथ सीधी नाक, मजबूत जबड़े और मजबूत शरीर, नीले या भूरे रंग की आंख, लाल, सफेद, रंग की त्वचा।

वितरण : उत्तरी भारत के विभिन्न हिस्सों में विशेष रूप से पंजाब और राजस्थान में बिखरे हुए।

उदाहरण : चित्राल के खो (भारत-पाकिस्तान), लाल कफिर (the Red Kaffirs), और ख ाश (Khath)।

भारतीय नस्लीय वर्गीकरण पर वर्तमान ज्ञान यह निष्कर्ष निकालने के लिए प्रेरित करता है कि ऑस्ट्रेलॉयड, भारत के सबसे शुरुआती निवासी थे। जिन्हें शायद भारत के कुछ नेग्रिटो उपभेदों के कुछ अंश प्राप्त हुए हों। मंगोलॉयड नस्ल भारत के कुछ हिस्सों में प्रमुख है । भारत में नस्लीय वर्गीकरण की समस्या को हल करने के लिए अधिक शोध किए जाने की आवश्यकता है।

12.5 सारांश

वास्तव में, जैविक मानवविज्ञानियों ने जैविक निर्माण के रूप में नस्ल' शब्द को त्याग दिया, बल्कि उन्होंने कहा कि नस्ल एक सांस्तिक निर्माण है। आबादी के अंदर' और आबादी के बीच' के बदलावों के लिए तीन स्पष्टीकरण हैं, ये हैं – प्रा तिक चयन, जीन प्रवाह और अनुवांशिक बहाव। आज की दुनिया के लगभग सभी वैज्ञानिक मानव जाति की अवधारणा को मानव आबादी को परिभाषित करने के वैज्ञानिक तरीके के रूप में अस्वीकार करते हैं। हालांकि नस्ल' को समझने के लिए, एक ऐतिहासिक निर्माण के रूप में हमें उपर्युक्त विद्वानों के योगदान का अध्ययन करना चाहिए। ऐतिहासिक रूप से नस्ल में वर्गीकरण को निर्धारित करने वाले

मतभेद मुख्य रूप से आनुवंशिक रूप से उपस्थिति के शारीरिक पहलू हैं। आनुवांशिक रूप से शब्द नस्ल एक समूह है जो जीन आवृत्तियों के साथ समान प्रजातियों की नस्ल के अन्य समूहों से भिन्न होता है। वैज्ञानिक ने पता लगाया कि तथाकथित नस्ल के बीच आनुवांशिक मतभेद नस्ल के भीतर मतभेदों की तुलना में बेहद कम हैं। इसलिए, आजकल मानवविज्ञानी मानते हैं कि नस्ल की अवधारणा अवैज्ञानिक है और नस्लीय श्रेणियां मनमानी पदनाम हैं। यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि, आज की दुनिया के सभी मानव समूह एक ही प्रजाति के हैं- होमो सेपियंस सेपियंस, और पारस्परिक रूप से जुड़े होते हैंय नस्ल उत्परिवर्तन, चयन और अनुकूलन का परिणाम हैं।

12.6 संदर्भ

बेर्नास्कोनी, आर., एंड लॉट, टी.एल. (एड.). (2000). *द आइडिया ऑफ रेस* हैकेट पब्लिशिंग.

हूटन, ई. ए. (1946). *अप फ्रॉम द एप* द मैकमिलन कंपनी.

चहल, एस.एम.एस. (2016). *कांसेप्ट ऑफ रेस* ई-ज्ञानकोश. ऐक्सेस्ड ऑनरू 2018 जुलाई, 06. रीट्राइव्ड फ्रॉम : http://egyankosh-ac-in/bitstream/123456789/41417/1/ Unit&1-pdf

बेगम, जी. (2016). क्लासिफिकेशन ऑफ रेसेस. ई-पीजी पाठशाला रू अ गेटवे टू आल पोस्ट ग्रेजुएट कोर्सेसेस. ऐक्सेस्ड ऑन : 2018 जुलाई, 08 रीट्राइव्ड फ्रॉम : http://epgp-inflibnet-ac-in/epgpdata/uploads/epgp_content/anthropology/01_physical___biological_anthropology_/27_-classification_of_races/et/7221_et_et_27-pdf

12.7 आपकी प्रगति जाचने के लिए उत्तर

1) संस्‍ त साहित्य के अनुसार प्राचीन भारतीय जनसंख्या को तीन प्रकारों में वर्गी त किया गया है हल्के रंग वाले इंडो-आर्य, पीले रंग के किरात (इंडो-मंगोलोइड्स) और काले रंग वाले निशाद (आस्ट्रेलियाड्स)

2) 1758 में, एक स्वीडिश वनस्पतिविद कैरोलस लिनिअस ने टैक्सोनोमिक वर्गीकरण की स्थापना की और मानव स्पीसीज के चार किस्मों की पहचान की - होमो यूरोपीय, होमो अमेरिकन, होमो एशियाटिक और होमो अ रीकी।

3) ब्लूमेंबैक ने नस्लीय मूल के 'क्षरणीय परिकल्पना' के लिए तर्क दिया और दावा किया कि आदम और हव्वा कोकेशियान विशेषताओं के साथ एशिया के निवासी थे। अन्य नस्ल शायद सूर्य और आहार जैसे पर्यावरणीय कारकों के अपघटन के कारण उत्पन्न हुई। इसलिए, ठंडी हवा की वजह से एस्किमो (अब इनयूट्स कहा जाता है) में कम पिगमेंटेशन और उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में सूरज की गर्मी की वजह से नेग्राइड में ज्यादा पिगमेंटेशन उत्पन्न हुआ। उन्होंने माना कि अन्य सभी रूप सूर्य और आहार के आधार पर कोकेशियान रूप में वापस आ सकते हैं। हालांकि, कोई भी ब्लूमेंबैक के क्षरणीय विचारों में वैज्ञानिक नस्लवाद ढूंढ सकता है, हालांकि ब्लूमेंबैक ने कभी भी एक नस्ल को दूसरे से बेहतर नहीं माना ।

4) अर्नेस्ट अल्बर्ट ह न (1887-1954), एक यहूदी-अमेरिकी शारीरिक मानवविज्ञानी, नस्लीय वर्गीकरण और अपनी लोकप्रिय पुस्तक अप फ्रॉम द एप' के लिए जाने जाते हैं।

5) 1931 में, ह न ने तीन प्राथमिक नस्ल जैसे काकेशॉयड, नेग्राइड और मंगोलोइड को कई समग्र उप-नस्ल के साथ पहचान की। हालांकि 1947 में, उन्होंने अपना वर्गीकरण संशोधित किया। ह न के मानवनस्ल का संशोधित वर्गीकरण (1947) के लिए देखें भाग 12.2 ।

6) नेग्राइड नस्ल को निम्नलिखित विशेषताओं द्वारा पहचाना जाता है:

- z काले भूरे से काले रंग की त्वचा,
- z काले नी या घुंघराले बाल,
- z शरीर और चेहरे के बाल दुर्लभ,
- z ओक्सिपुट अस्थि बाहर की ओर उन्मुख, डालिकोसेफेलिक सिर,
- z चौड़े और चपटे नाक,
- z कम धसीं नाक की जड़ और नाक की अस्थि,
- z चेहरे में उद्हनुता,
- z आंखों के किनारे छोटे,
- z गहरे भूरे से काले रंग की आंख,
- z घुमावदार हेलिक्स के साथ कान का आकार छोटा और चौड़ा,
- z मोटे और बहिर्वलित होंठ, और
- z कद में विविधता।

7) 1915 में सर हर्बर्ट होप रिजले ने मानव जनसंख्या को मानवमितीय माप के आधार पर वर्गी त कर भारतीय आबादी के कुल मिलाकर सात शारीरिक प्रकारों' की पहचान की।

1) द्राविड़
2) इंडो-आर्यन
3) मंगोलॉयड
4) आर्यो-द्राविड़ियन
5) मंगोलो-द्राविड़ियन
6) सिथो-द्राविड़ियन
7) तुर्की-ईरानी

8) मोंगोलोइड की शारीरिक विशेषताएं: चौड़े-सिर, पीलेपन के साथ त्वचा का रंग काला, चेहरे और शरीर पर कम बाल, कद आमतौर पर मध्यम या निम्न मध्यम। नाक चौड़ाई की एक विस्तृत श्रृंखला दिखाती है, चेहरा सपाट होता है और आंखें एपिकेंथिक परत के साथ तिरछी होती हैं।

वितरणः हिमालयी क्षेत्र, विशेष रूप से उत्तर पूर्व फ्रंटियर, नेपाल और बर्मा।

उदाहरणः लाहुल और कुल्लू घाटी के कानेट, दार्जिलिंग और सिक्किम के लेपचा, नेपाल के लिंबस, मुर्मिस और गुरुंग्सय, असम के बोडो।

9) *द्राविड़ जाति का वितरणः* सियालोन से भारत के दक्षिणी भाग, पश्चिमी बंगाल, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश (हैदराबाद), मध्य भारत और छोटा नागपुर की गंगा की घाटी तक।

उदाहरणः मलाबार (दक्षिण भारत) के पनिया और छोटा नागपुर के संथाल ।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 13 नस्ल और नस्लवाद *

इकाई की रूपरेखा

13.0 नस्ल की परिभाषा

13.1 नस्ल और नस्लवाद की अवधारणा

13.1.1 नस्ल और नृजातीयता

13.1.2 नस्लवाद

13.2 सामाजिक बीमारी के रूप में नस्लवाद

13.2.1 परिणाम

13.2.2 नस्लवाद के खिलाफ आवाजें (नस्ल से नस्लवाद)

13.3 नस्ल पर वक्तव्य

13.3.1 यूनेस्को का वक्तव्य (1951)

13.3.2 अमेरिकन एंथ्रोपोलॉजिकल एसोसिएशन का वक्तव्य (1998)

13.4 सारांश

13.5 संदर्भ

13.6 आपकी प्रगति जाचने के लिए उत्तर

अधिगम उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप, निम्न कार्य कर पाएंगे :

- नस्ल और नस्लवाद की अवधारणा को समझेंगे
- नस्लवाद के परिणामों और आलोचना को समझेंगे तथा
- यूनेस्को और अमेरिकन एंथ्रोपोलॉजिकल एसोसिएशन द्वारा बताये गए नस्ल के बारे में विभिन्न कथनों के बारे में जानेंगे।

13.0 नस्ल की परिभाषा

20वीं शताब्दी के मध्य में आने वाली नस्ल पर कुछ परिभाषाएं दो दृष्टिकोणों से देखी गई थीं : पहली यह कि उद्विकास के साथ-साथ भौगोलिक वितरण नस्ल निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और दूसरा, वह प्रजनन आबादी के महत्व को दर्शाता है जो आम लक्षणों वाले समूह को दूसरे से अलग करता है। हट्टन, डोबजानस्की और गर्न जैसे विद्वानों ने अपनी परिभाषाओं में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है कि ये प्रजनन या मेंडेलियन आबादी समय के अनुसार बदल सकती है। अब आइए विद्वानों द्वारा दी गई नस्ल की कुछ महत्वपूर्ण परिभाषाए जानें:

* प्रो.रंजना रे, मानव विज्ञान विभाग,कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता. प्रो. सुभो राय, मानवविज्ञान विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता.

हटटन (1946) ने नस्ल को एक समूह के रूप में परिभाषित किया, जिसके सदस्य विशिष्ट शारीरिक लक्षणों के समान रूप से समान संयोजन दिखाते हैं, जो उनके सामान्य वंश के लिए हैं।"

डोबजन्स्की (1944) के अनुसार, नस्ल को कुछ जीनों की भिन्नता के रूप में परिभाषित किया जाता है, लेकिन वास्तव में जीन का सीमाओं (आमतौर पर भौगोलिक) के आदान-प्रदान करने में सक्षम या संभावित रूप से अलग होते हैं। उन्होंने आगे कहा कि नस्ल मतभेद वस्तुगत तथ्य हैं, नस्ल को हम अपनी पहचानने की सुविधा के लिए चुनते हैं।

बोयड (1950) के अनुसार, नस्ल एक ऐसी आबादी है जो एक या अधिक जीनों की आवृत्ति के संबंध में अन्य मानव आबादी से काफी भिन्न है। यह एक मनमाना मामला है, और कितने, जीन लोकाई (loci) हम चुनते हैं वह एक पुंज (constellation) के सामान है ।

मेयर (1963) ने उप-नस्ल के संदर्भ में नस्ल को परिभाषित करने का प्रयास किया, क्योंकि एक उप-नस्ल, नस्लों की श्रेणी के भौगोलिक उपखंड का निवास करने वाली नस्ल के समान रूप से इसी तरह की आबादी का एक समुच्चय है और नस्लों की अन्य आबादी से भिन्न है।''

बेकर (1967) ने नस्ल को परिभाषित करते हुए कहा कि मानव आबादी को आनुवंशिक दूरी के रूप से परिभाषित किया जा सकता है और इस तरह नस्ल , मानव जीव विज्ञान में अनुसंधान के बहु-विषयक क्षेत्र में एक तथ्यात्मक निर्माण के रूप में कार्य कर सकती है।'

उपरोक्त परिभाषाए में सूक्ष्म अंतर देखा जा सकता है लेकिन साथ ही साथ परिभाषाए कुछ सामान्यताओं को प्रदर्शित करती हैं जैसे कि नस्ल निर्माण में भौगोलिक वितरण की भूमिका और लोगों में आनुवांशिक लक्षणों को साझा करना जो सामान्य वंश, यानि प्रजनन आबादी के माध्यम से एक दूसरे से संबंधित हैं।'

नस्ल कभी भी केवल मानव भिन्नता के शारीरिक विवरण से सम्बन्धित नहीं रही है। अठारहवीं शताब्दी में पश्चिमी विज्ञान में इसकी उत्पत्ति के बाद से नस्ल का उपयोग मानव को हीन और श्रेष्ठ प्रकार के अनुसार वर्गी त करने और श्रेणीबद्ध करने के लिए किया गया है। हालांकि प्रबुद्धता के दौरान पश्चिम में एक अवधारणा के रूप में विकसित की गई नस्ल, यह गैर-पश्चिमी दुनिया के कई हिस्सों में फैल गई है, जिसमें दास व्यापार और बाद में, औपनिवेशिक विजय और प्रशासन शामिल हैं, जिन्होंने इसे एक सामाजिक विभाजन का प्रभावी उपकरण के रूप में इस्तेमाल किया है।

मानव विज्ञान का इतिहास और नस्ल से संबंध जटिल और अक्सर आत्म-विरोधाभासी है। नस्ल अवधारणा से संग्लग्नता ने इसकी उत्पत्ति को आकार दिया, इसके बाद उसने नस्ल को खारिज करने और जैविक सिद्धांतों पर इसके वैज्ञानिक अस्तित्व या निर्भरता को नकारने की कोशिश की। नस्ल को अब एक सामाजिक निर्माण के रूप में देखा जाता है जिसे मुख्य रूप से शारीरिक उपस्थिति या फेनोटाइप द्वारा मान्यता प्राप्त है। (लुहर-लोबन, 2018)

अपनी प्रगति को जाचें

1) किसने एक समूह के रूप में नस्ल को परिभाषित किया, जिसके सदस्य विशिष्ट शारीरिक लक्षणों के व्यक्तिगत समान संयोजन प्रस्तुत करते हैं

.....

.....

.....

.....

2) विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई नस्ल की विभिन्न परिभाषाओं में क्या समानताए पाई जाती हैं

.....

.....

.....

.....

.....

13.1 नस्ल और नस्लवाद की अवधारणा

18वीं शताब्दी से मानवविज्ञानी शारीरिक मानव विविधताओं का अध्ययन करने के लिए इच्छुक हो गए और उन अध्ययनों के आधार पर दुनिया की आबादी को नस्ल' (race) नामक विभिन्न श्रेणियों में वर्गी त करने के लिए कई प्रयास किए गए। Racc (नस्ल) शब्द का प्रयोग पहली बार 18वीं शताब्दी में फ्रांसीसी प्र तिवादी बफन द्वारा किया गया था (जोशी, 2015)। विश्व जनसंख्या को वर्गी त करने के लिए जो मानदंड इस्तेमाल किए गए थे, वे कुछ अवलोकन योग्य थे (जैसे त्वचा का रंग, बालों का रंग, बालों का रूप और नाक का रूप), कुछ मापन योग्य थे (जैसे कद), और अन्य जैविक लक्षण (जैसे रक्त समूह और रक्त एंजाइम)।

शारीरिक विविधताओं के अलावा सांस्तिक लक्षण जैसे भाषा, भोजन का तरीका, वस्त्र विन्यास, व्यवहार और कई अन्य आधारों पर विश्व की आबादी को विभिन्न मानव समूहों के बीच वर्गीकृत किया जाता है।

13.1.1 नस्ल और नृजातियता

"एक नृजातीय समूह कई आबादी में से एक का प्रतिनिधित्व करता है, जिनको एक दूसरे तथा साथ में श्रेणीबद्ध किया जाता है और वे सभी होमो सैपियंस में समाविष्ट होते हैं लेकिन व्यक्तिगत रूप से भौगोलिक और सामाजिक जैसी बाधाओं के माध्यम से अलग होने के कारण अपने शारीरिक और सांस्तिक अंतर बनाए रखते हैं" (मोंटेग्यू) 1942)। ये अंतर अलग-अलग होंगे क्योंकि, मूल आनुवंशिक अंतरों पर काम करने वाले भौगोलिक और सामाजिक बाधाओं की शक्ति भी अलग-अलग होती है।

1970 में फ्रेडरिक बर्थ के काम ने इस बात पर जोर दिया कि एक नृजातीय समूह के सदस्य एक निर्धारित सामान्य वंश और साझा सांस्कृतिक लक्षणों के आधार पर अन्य नृजातीय समूहों के सदस्यों से खुद को अलग करते हैं। नतीजतन, एक विशेष नृजातीय समूह का सदस्य एक ही नृजातीय समूह (सगोत्र विवाह) एंडोगैमी से वैवाहिक साथी का चयन करना पसंद करता है।

सगोत्र विवाह (एंडोगैमी) एक विशेष नृजातीय समूह की ओर निरंतर प्राथमिक रहता है और एक जैविक इकाई का प्रयास करता है। हालाकि, ये नृजातीय सीमाए कठोर नहीं हैं, अंतर-सांस्कृतिक विवाह में वृद्धि एक अच्छा उदाहरण हो सकता है। नृजातीय सीमाए अलग-अलग रूपों में हो सकती हैं जिनमें सांस्कृतिक, भाषाई, धार्मिक, आर्थिक शामिल है (हेअर एवं अन्य, 2009)।

नस्ल और नृजातीयता की अवधारणा के बीच एक सामान्य बात है साझा सामान्य वंश। इस समानता के बावजूद, कुछ अंतर हैं। सबसे पहले, नस्ल मुख्य रूप से एकात्मक है। आपके पास केवल एक नस्ल हो सकती है, जबकि आप कई नृजातीय संबद्धता का दावा कर सकते हैं। आप नृजातीय रूप से उड़िया और भारतीय के रूप में पहचान कर सकते हैं लेकिन नस्लीय पहचान के लिए आपको अनिवार्य रूप से अश्वेत (काला) या श्वेत (गोरा) होना चाहिए। नृजातीय समूह की अवधारणा की तुलना में, नस्ल पदानुक्रमित है और सत्ता में यह एक अंतर्निहित असमानता है। कुछ लोगों का मत है कि नृजातीयता और नस्ल दोनों सामाजिक रूप से निर्मित हैं और दोनों ही भ्रम और कल्पना हैं। लेकिन नस्लीय श्रेणियों का लोगों के जीवन पर बहुत अधिक ठोस प्रभाव पड़ा है क्योंकि उनका उपयोग भेदभाव करने और संसाधनों को असमान रूप से वितरित करने और कानून के तहत सुरक्षा के लिए विभिन्न मानकों को स्थापित करने के लिए किया गया है (रेस-द इल्यूजन ऑफ द इल्यूशन, तिथि अनिर्धारित)।

13.1.2 नस्लवाद

नस्ल की अवधारणा ने नस्लवाद को जन्म दिया। नस्लवाद इस गलत धारणा पर आधारित है कि बुद्धि और विभिन्न सांस्कृतिक विशेषताएं जैसे मूल्य और नैतिकता, त्वचा का रंग, नाक के रूप, बालों का रंग और इसी तरह की शारीरिक विशेषताओं के साथ विरासत में मिली हैं। इससे लोगों में यह गलत धारणा पैदा हुई कि बुद्धि के साथ-साथ सांस्कृतिक लक्षण भी जैविक विशेषताओं की तरह विरासत में मिले हैं। ऐसी मान्यताएं इस धारणा पर आधारित हैं कि एक समूह दूसरे से श्रेष्ठ है। यूजेनिक आंदोलन, नस्लों की शुद्धता की धारणा और लोगों का उत्पीड़न नस्लवाद का परिणाम है जो कि सिर्फ एक नस्लीय भ्रांति मात्र है। अमेरिकन एंथ्रोपोलॉजिकल एसोसिएशन स्टेटमेंट ऑन रेस (17 मई, 1998) के अनुसार, "यूरोपीय-अमेरिकियों के बीच के नेताओं ने प्रत्येक रेस' से जुड़ी सांस्कृतिक/व्यवहार संबंधी विशेषताओं को गढ़ा, यूरोपीय लोगों के साथ बेहतर लक्षणों को जोड़ना और अश्वेतों और भारतीयों को नकारात्मक और हीन लक्षणों से जोड़ना।"

नस्लीय पूर्वाग्रह कई रूपों में दिखाई दे सकता है जैसे कि धर्म, भाषा, भोजन, पोशाक आदि। ऐसे उदाहरण भी आए हैं जब नस्लीय असहिष्णुता के कारण राजनैतिक संकट पैदा हुआ। उदाहरण के लिए, जब बॉलीवुड अभिनेता शाहरुख खान को अमेरिकी हवाई अ` पर

अमेरिकी आव्रजन अधिकारियों द्वारा फंसाया गया या ऑस्ट्रेलिया में पंजाबी मूल के छात्रों का उत्पीड़न किया गया। लोग इन घटनाओं पर नस्लवादी टिप्पणी 'या' नस्लवाद 'के रूप में टिप्पणी करते हैं।

अपनी प्रगति को जाचें

3) 18वीं शताब्दी के दौरान विश्व की आबादी को वर्गी त करने के लिए किन मानदंडों का उपयोग किया गया था

.....

.....

.....

4) नस्ल और नृजातीयता की अवधारणा में क्या अंतर हैं

.....

.....

.....

5) नस्लवाद का क्या अर्थ है

.....

.....

.....

13.2 सामाजिक बीमारी के रूप में नस्लवाद

नस्लवाद अन्य लोगों के खिलाफ नस्ल' या उनकी मानी हुई नस्ल (उनकी जीवविज्ञान या वंशावली या शारीरिक उपस्थिति) के कारण पूर्वाग्रह या भेदभाव है। नस्लवाद में यह धारणा शामिल है कि लोगों का जन्म या जैविकी यह निर्धारित करता है कि वे कौन हैं, उनका व्यवहार भी जीवविज्ञान पर आधारित है। घृणा हो या ना हो, जातिवाद में पूर्वाग्रह या भेदभाव तो शामिल होता है। यह व्यक्तिगत या संस्थागत, अनुभवजनित या गैर-मान्यता प्राप्त हो सकता है, लेकिन यह आम तौर पर रूढ़ प्रारूप (स्टीरियोटाइप) पर आधारित होता है कि एक विशेष आनुवंशिक पृष्ठभूमि के सभी लोग कुछ अनुचित तरीके से व्यवहार करते हैं। वे सब करते हैं, उनके पास कोई विकल्प नहीं है, क्योंकि यह उनके जीन में है (रेली और अन्य, 2003)।

13.2.1 परिणाम

नस्लीय रूप से आधारित शारीरिक विशेषताओं को गलत तरीके से मानसिक, भावनात्मक, बौद्धिक और सांस्कृतिक विशेषताओं के साथ जोड़ा जाता था। इस तरीके से कुछ नस्लों को दूसरों के लिए स्पष्ट रूप से हीन के रूप में पहचाना गया था – आदिम बनाम उन्नत – पश्चिमी सभ्य आबादी को दूसरों से श्रेष्ठ माना जाता था। आधुनिक यूरोपीय समाज ने दुनिया की आबादी के अलग-अलग जैविक समूहों में यूरोपीयन, ब्लैक, व्हाइट, एशियन या अन्य लोगों

को विभाजित करने में विश्वास किया है जो स्थायी रूप से विभाजित हैं और बेहतर से लेकर उच्चतर प्रकार के पदानुक्रम में व्यवस्थित हैं।

उदाहरण के लिए जब यूरोपीय खोजकर्ताओं ने अफ्रीका के होटनटोट और बुशमेन लोगों को खोजा तो उन्होंने अपनी विशेषताओं की तुलना में उन लोगों के जीवन स्तर, भाषा और सांस्कृतिक प्रथाओं को निम्न और अमानवीय मानक के रूप में पाया। इसी तरह भारत में, औपनिवेशिक शासक भारतीयों को मूल निवासी' कहते थे। लिंग और वर्ग के आधार पर इसी तरह की असमानताए पश्चिमी दुनिया पर हावी थीं और भारतीय उपमहाद्वीप में ये नृजातियां और जातियां थीं। इस तरह के वर्गीकरण में व्यापक रूप से विश्वास किया गया है और इस विश्वास के बदले में श्वेत यूरोपीय लोगों के ऐतिहासिक रूप से हीन लोगों पर वर्चस्व व उनके शोषण और हत्या को सही ठहराया गया। इस तरह के जैविक अंतर में विश्वास का व्यवहार पर बहुत प्रभाव पड़ा है (मैक मास्टर, 2001)।

13.2.2 नस्लवाद के खिलाफ आवाजें (नस्ल से नस्लवाद)

फ्रांज बोआस और रूथ बेनेडिक्ट दोनों के छात्र रहे ब्रिटिश मूल के मानवविज्ञानी एशले मोंटेगू पहले वैज्ञानिक थे जिन्होंने नस्ल की अवधारणा की आलोचना की थी। उन्होंने 1940 के दशक में यह तर्क देकर प्रसिद्धि अर्जित की कि एक जैविक तथ्य के बजाय नस्ल एक सामाजिक निर्माण और धारणाओं का उत्पाद है । मोंटेग्यू ने मानवविज्ञानी कार्लेटन कून की धारणा का विरोध किया था कि गोरे और अश्वेत अलग-अलग पथ के साथ उद्विकसित होते हैं (क्रिटिक्यूइंग रेस, तिथि अनिर्धारित)। मोंटेग्यू (1942) ने अपने महत्वपूर्ण कार्य, मैनज मोस्ट डेंजरस मिथ : द फॉलसी ऑफ रेस में मानव नस्ल की वैज्ञानिक वैधता पर सवाल उठाया।

इसी तरह, फ्रैंक बी. लिविंगस्टोन ने 1964 में नॉन-एक्सिस्टेंस ऑफ ूमन रेस' पर अपना अध्याय लिखा। उन्होंने आनुवंशिक परिवर्तनशीलता की व्याख्या करने के लिए नस्ल अवधारणा की उपयोगिता की आलोचना यह तर्क देते हुए की है कि यदि जनसंख्या में अगर 'नीग्रो X प्रतिशत है तो एक पर्याप्त नीग्रो होने के लिए उसमे सभी विशेषताओं अंतरो की नस्लीय व्याख्या, का X प्रतिशत होना चाहिए। वास्तव में, जैसा कि लिविंगस्टोन ने समझाया है, आनुवंशिक लक्षण अक्सर असंतोषजनक हो सकते हैं और अगर दो जीन अलग-अलग होते हैं, तो एक के आधार पर स्थापित नस्ल दूसरे में परिवर्तनशीलता का वर्णन नहीं करती है (आउट्राम और एलिसन, 2006)। उन्होंने आगे यह सुझाव दिया कि आबादी के बीच मतभेदों का पता लगाने के बजाय, अधिक वैध और फलदायी दृष्टिकोण विभिन्न स्थानों में जैविक भिन्नता के पैटर्न को समझना है। इस तरह के दृष्टिकोण से मानव जैविक भिन्नता के अनुकूली महत्व में अधिक अंतर्दृष्टि प्राप्त होगी क्योंकि प्रा तिक चयन को संचालित करने वाले पर्यावरणीय पैरामीटर भौगोलिक क्षेत्र में व्यवस्थित रूप से भिन्न होते हैं।

नस्लीय वर्गीकरण पर जैक्स बरजुन (1965) के शब्दों में कोई तर्क कभी भी किसी भी विद्वान द्वारा मानवों के बीच मतभेद के लिए विकसित नहीं किया गया है। पूरा तर्क इस बारे में है कि क्या अंतर मौजूद हैं और उन्हें कैसे समझाना चाहिए'' (मोलनार, 2015)। इस प्रकार 'रेस' शब्द का उपयोग लंबे समय से हो रहा है, और विवादास्पद बना हुआ है और मानवविज्ञानी इस विषय के साथ कभी भी सहज नहीं रहे हैं।

अपनी प्रगति को जाचें

6) किन आधारों पर कुछ नस्लों को अन्य की तुलना में श्रेष्ठ और उन्नत माना गया एक उदाहरण दीजिए।

.....

.....

7) उन तीन विद्वानों का नाम बताइए जिन्होंने नस्लवाद की अवधारणा की आलोचना की

.....

.....

13.3 नस्ल पर वक्तव्य

13.3.1 यूनेस्को का वक्तव्य (1951)

8 जून 1951 को यूनेस्को के मुख्यालय में नस्ल पर यूनेस्को के बयान का मसौदा तैयार किया गया था। इस कथन को विभिन्न विषयों जैसे कि मानवविज्ञान, प्राणीविज्ञान, जेनेटिक्स, बायोमेट्री और अन्य विद्वानों के एक समूह द्वारा तैयार किया गया था। एशले मोंटेगयु (संयुक्त राज्य अमेरिका) विद्वानों में से एक थे। अन्य उल्लेखनीय विद्वानों में अर्नेस्ट बीगलहोल (न्यूजीलैंड), जुआन कोमास (मेक्सिको), ला कोस्टा पिंटो (ब्राजील), फ्रैंकलिन फ्रेजियर (संयुक्त राज्य अमेरिका), मॉरिस गिन्सबर्ग (यूनाइटेड किंगडम), हुमायूं कबीर (भारत) और लेवी-स्ट्रॉस (फ्रांस) शामिल थे। यूनेस्को के बयान के प्रमुख निष्कर्ष इस प्रकार हैं:

1) वैज्ञानिक आमतौर पर इस बात से सहमत हैं कि सभी मानव एक ही प्रजाति(species) के हैं, होमो सेपियन्स और एक समान खण्ड से विकसित हुए हैं। भले ही इस आम खण्ड से मानव अलग-अलग मानव समूहों में कब और कैसे अलग हुआ, इस पर सब एक मत नहीं हैं। मानववैज्ञानिक रूप से, 'नस्ल' का उपयोग केवल मानवजाति को समूहों में वर्गी त करने के लिए के लिए होना चाहिए, ऐसे समूह जो अन्य समूहों से मुख्य रूप से व्यावहारिक और शारीरिक भिन्नता दिखाते हों ।

2) मानव समूहों के बीच शारीरिक भिन्नता उनकी अंतर वंशानुगत संरचना में अंतर तथा वातावरणों में अंतर के कारण है। कई मामलों में दोनों प्रभाव कार्य करते हैं। आनुवांशिकी के अनुसार वंशानुगत अंतर प्रक्रियाओं के दो युग्मों की क्रियाशीलता का परिणाम हैं। एक तरफ अलग-अलग आबादी को प्रा तिक चयन और सामग्री कणों (जीन) में सामयिक परिवर्तन (उत्परिवर्तन) द्वारा निरंतर बदला जा रहा है, जो आनुवंशिकता को नियंत्रित करते हैं। जीन आवृत्ति में परिवर्तन और विवाह के रीति-रिवाजों और प्रजनन संरचना से आबादी भी प्रभावित होती है। दूसरी ओर, पारगमन लगातार अलग-अलग स्थापित विभाजन को तोड़ रहा है।

3) राष्ट्रीय, धार्मिक, भौगोलिक, भाषाई और सांस्- तिक समूह जरूरी नहीं कि नस्लीय समूहों के साथ मेल खाते हों और ऐसे समूहों के सांस्- तिक लक्षणों का नस्लीय लक्षणों के साथ कोई संबंध नहीं है। अमेरिकी न एक जाति हैं, न अंग्रेज हैं, न फ्रांसीसी, न ही कोई अन्य राष्ट्रीय समूह। इस तरह की गंभीर त्रुटियां आदतन तब होती हैं जब नस्ल' शब्द का प्रयोग लोकप्रिय बोलचाल में किया जाता है : ऐसे मानव समूहों की बात करते समय इस शब्द का इस्तेमाल कभी नहीं किया जाना चाहिए।

4) मानव नस्ल को विभिन्न मानवशास्त्रियों द्वारा अलग-अलग तरीकों से वर्गी त किया जा सकता है, और किया भी गया है। अधिकांश लोग मौजूदा मानवजाति के बड़े हिस्से को कम से कम तीन बड़ी इकाइयों में वर्गी त करने पर सहमत हैं, जिन्हें प्रमुख समूह कहा जा सकता है (फ्रेंच, ग्रैंड-रेस में)। ऐसा वर्गीकरण किसी एक शारीरिक लक्षण पर निर्भर नहीं करता है। इसके अलावा, रूपात्मक दृष्टि से, एक विशेष जाति को दूसरे से श्रेष्ठ या हीन मानना असंभव है।

5) अधिकांश मानवविज्ञानी अब मानव नस्ल के अपने वर्गीकरण में मानसिक विशेषताओं को शामिल करने की कोशिश नहीं करते हैं। एक एकल नस्ल के भीतर के अध्ययनों से पता चला है कि जन्मजात क्षमता और पर्यावरणीय अवसर, बुद्धि और स्वभाव के परीक्षणों के परिणामों को निर्धारित करते हैं, हालांकि उनके सापेक्ष महत्व विवादित है। किसी भी स्थिति में, दो समूहों के सदस्यों को मानसिक क्षमता के आधार पर अलग करना संभव नहीं है, क्योंकि उन्हें अक्सर धर्म, त्वचा के रंग, बालों के रूप या भाषा के आधार पर अलग किया जा सकता है।

6) वर्तमान में हमारे पास उपलब्ध वैज्ञानिक सामग्री इस निष्कर्ष को सही नहीं ठहराती है कि विरासत में मिली आनुवांशिक भिन्नताएं विभिन्न लोगों या समूहों की संस्- तियों और सांस्- तिक उपलब्धियों के बीच अंतर पैदा करने का एक प्रमुख कारक है। इसके विपरीत यह इंगित करता है कि इस तरह के मतभेदों को समझाने में प्रमुख कारक सांस्- तिक अनुभव का इतिहास है, जिससे प्रत्येक समूह गुजरा है।

7) तथाकथित शुद्ध' नस्ल के अस्तित्व का कोई सबूत नहीं है। हम कंकाल के अवशेषों से मुख्य रूप से पहले की नस्ल को जानते हैं और इसलिए हमारा ज्ञान सीमित है। नस्ल के मिश्रण के संबंध में, साक्ष्य इस तथ्य की ओर इशारा करते हैं कि मानव संकरण एक अनिश्चितकाल से लेकिन काफी समय से चल रहा है। वास्तव में, नस्ल गठन और नस्ल विलुप्त होने या अवशोषण की प्रक्रियाओं में से एक नस्ल के बीच संकरण के माध्यम से है। जैसा कि इस बात का कोई विश्वसनीय सबूत नहीं है कि नुकसानदायक प्रभाव उत्पन्न होते हैं, इसलिए विभिन्न जातियों के व्यक्तियों के बीच अंतर-विवाह को प्रतिबंधित करने के लिए कोई जैविक औचित्य मौजूद नहीं है।

8) हमें अब मानव समानता की समस्या पर इन बयानों के असर पर विचार करना होगा। हम इस बात पर जोर देना चाहते हैं कि अवसर की समानता और कानून में समानता किसी भी तरह से नैतिक सिद्धांतों या इस दावे पर कि मनुष्य वास्तव में प्रतिभा में बराबर है पर निर्भर नहीं है।

व्यक्तिगत और समूह भिन्नताओं के संबंध में वैज्ञानिक रूप से स्थापित वर्तमान में औपचारिक रूप से इसे स्थापित करना सार्थक है:

1) नस्ल के मामलों में, जिस वर्गीकरण आधार का उपयोग मानवविज्ञानी कर सकते हैं वे केवल शारीरिक (शारीरीय और दैहिक) हैं।

2) उपलब्ध वैज्ञानिक ज्ञान इस आधार को नहीं मानता कि मानवजाति के समूह बौद्धिक और भावनात्मक विकास के लिए अपनी जन्मजात क्षमता पर निर्भर हैं।

3) एकल नस्ल के भीतर मनुष्य के बीच जैविक अंतर, वृद्ध नस्ल के बीच जैविक अंतर के सामान हो सकता है।

4) जो भी विशाल सामाजिक परिवर्तन हुए हैं वो किसी भी प्रकार से नस्लीय परिवर्तनों से जुड़े नहीं हैं। इस प्रकार ऐतिहासिक और समाजशास्त्रीय अध्ययन इस दृष्टिकोण का समर्थन करते हैं कि मानवों के विभिन्न समूहों के बीच सामाजिक और सांस्कृतिक अंतर को निर्धारित करने में आनुवंशिक अंतर बहुत कम महत्व रखते हैं।

5) इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि नस्ल का मिश्रण, जैविक दृष्टिकोण से नुकसानदेह परिणाम देता है। नस्ल मिश्रण के सामाजिक परिणाम, चाहे अच्छे या खराब हों, का आमतौर पर सामाजिक कारकों से पता लगाया जा सकता है। (संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन, 1951 का नस्ल पर वक्तव्य)

13.3.2 अमेरिकन एंथ्रोपोलॉजिकल एसोसिएशन (1998)

अमेरिकन एंथ्रोपोलॉजिकल एसोसिएशन के कार्यकारी बोर्ड ने 17 मई 1998 को नस्ल पर निम्नलिखित बयान को अपनाया :

किसी भी लक्षण में शारीरिक भिन्नता भौगोलिक क्षेत्रों की तुलना में धीरे-धीरे होती है क्योंकि भौतिक लक्षण एक-दूसरे से स्वतंत्र रूप से विरासत में मिले हैं, एक लक्षण की सीमा जानने से दूसरों की उपस्थिति का अनुमान नहीं लगाया जाता है। उदाहरण के लिए उत्तर में समशीतोष्ण क्षेत्रों, दक्षिण में उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में त्वचा का रंग हल्के से गाढ़े तक भिन्न होता है। यह नाक के आकार या बालों की बनावट से संबंधित नहीं है। काली त्वचा, नीली या गांठदार या घुंघराले या लहरदार या सीधे बालों से जुड़ी हो सकती है, ये सभी उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में विभिन्न देशज लोगों में पाए जाते हैं। ये तथ्य जैविक आबादी के बीच विभाजन की रेखाओं को मनमाने और व्यक्तिपरक दोनों रूपों में स्थापित करने के किसी भी प्रयास को प्रस्तुत करते हैं।

19वीं शताब्दी के प्रारंभ में विज्ञान के बढ़ते क्षेत्रों ने मानवीय मतभेदों के बारे में सार्वजनिक चेतना को प्रतिबिंबित करना शुरू कर दिया। नस्लीय' श्रेणियों के बीच मतभेदों को उनके चरम पर प्रक्षेपित किया गया था और तर्क दिया गया था कि अफ्रीकी, भारतीय और यूरोपीय अलग-अलग प्रजातियां थीं, जिनमें अफ्रीकियों को वर्गिकी रूप से वानर के करीब और मानव से दूर रखा गया था।

अंततः मानव मतभेदों के बारे में एक विचारधारा के रूप में नस्ल' बाद में दुनिया के अन्य क्षेत्रों में फैल गई। यह हर जगह औपनिवेशिक शक्तियों द्वारा उपयोग किए जाने वाले उपनिवेशों को विभाजित करने, रैंकिंग और नियंत्रित करने के लिए एक रणनीति बन गई। लेकिन यह औपनिवेशिक स्थिति तक सीमित नहीं था। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में यह यूरोपीय लोगों द्वारा एक दूसरे को रैंक प्रदान करने और अपने लोगों के बीच सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक असमानताओं को सही ठहराने के लिए नियोजित किया गया था।

नस्ल' इस प्रकार विश्वदृष्टि के रूप में विकसित हुई जो मानव मतभेदों और समूह व्यवहार के बारे में हमारे विचारों को वि त करती है। नस्लीय मान्यताएं मानव प्रजातियों में विविधता के बारे में मिथकों का गठन करती हैं और लोगों की क्षमताओं और व्यवहार के बारे में नस्लीय' श्रेणियों के समरूप हैं। नस्लीय मिथकों का मानवीय क्षमताओं या व्यवहार की वास्तविकता से कोई संबंध नहीं है।

20वीं शताब्दी के अंत में, अब हम समझते हैं कि मानव द्वारा सांस्कृतिक व्यवहार को सीखा

जाता है यह जन्म से ही शिशुओं में अनुकूलित होता है और हमेशा संशोधन के अधीन होता है। कोई भी मानव, निर्मित संस्कृति या भाषा के साथ पैदा नहीं होता है। आनुवांशिक प्रवृत्ति की परवाह किए बिना हमारे स्वभाव और व्यक्तित्व, अर्थ और मूल्यों के खंड के भीतर विकसित होते हैं जिन्हें हम संस्कृति' कहते हैं।

यह मानवशास्त्रीय ज्ञान का एक मूल सिद्धांत है कि सभी सामान्य मनुष्य किसी भी सांस्कृतिक व्यवहार को सीखने की क्षमता रखते हैं। सैकड़ों विभिन्न भाषाओं और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के प्रवासियों के साथ अमेरिकी अनुभव जिन्होंने अमेरिकी संस्कृति के लक्षणों और व्यवहार के कुछ संस्करण हासिल किए हैं, इस तथ्य का सबसे स्पष्ट प्रमाण है। इसके अतिरिक्त सभी भौतिक विविधताओं के लोगों ने विभिन्न सांस्कृतिक व्यवहारों को सीखा है और ऐसा करना जारी रखते हैं क्योंकि, आधुनिक परिवहन दुनिया भर में लाखों प्रवासियों को स्थानांतरित करता है।

किसी समाज या संस्कृति के संदर्भ में हम लोगों को कैसे स्वीकार करते हैं और उनके साथ कैसा व्यवहार किया जाता है इसका सीधा प्रभाव उस समाज पर पड़ता है। नस्लीय' विश्वदृष्टि का अविष्कार कुछ समूहों को सदैव के लिए निम्न स्थिति में लाने के लिए किया गया था। जबकि अन्य को विशेषाधिकार युक्त शक्ति और धन तक पहुंच की अनुमति प्राप्त थी। यह देखते हुए कि हम किसी भी संस्कृति के भीतर सामान्य मनुष्यों को प्राप्त करने और कार्य करने की क्षमता के बारे में जानते हैं, हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि तथाकथित नस्लीय' समूहों के बीच वर्तमान असमानताएं उनके जैविक विरासत के परिणाम स्वरूप नहीं हैं, लेकिन ऐतिहासिक और समकालीन सामाजिक, आर्थिक उत्पादों, शैक्षिक, शैक्षणिक और राजनीतिक परिस्थितियों के कारण है (अमेरिकन एंथ्रोपोलॉजिकल एसोसिएशन, 1998 का नस्ल पर व्यक्तव्य)।

अपनी प्रगति को जाचें

8) नस्ल पर यूनेस्को और अमेरिकन एंथ्रोपोलॉजिकल एसोसिएशन स्टेटमेंट का मसौदा कब तैयार किया गया था

.....

.....

.....

.....

9) नस्ल पर यूनेस्को के बयान के किसी भी दो प्रमुख बिंदुओं को लिखिए।

.....

.....

.....

10) 20वीं सदी के अंत में अमेरिकन एंथ्रोपोलॉजिकल एसोसिएशन ने नस्ल की अवधारणा का वर्णन कैसे किया

.....

.....

.....

4 सारांश

इस इकाई में समग्र चर्चा से आपको पता चला है कि मानवजाति में कई विविधताए देखी जाती हैं। विद्वानों को बा शारीरिक विशेषताओं ने मानव को विभिन्न समूहों में वर्गी त करने के लिए प्रेरित किया और उन्हें नस्ल के रूप में परिभाषित किया। समय के दौरान मानवजाति के विभाजन ने असमानता और मानव आबादी के बीच घृणा का विकास किया- जिसे नस्लवाद के रूप में जाना जाता है। यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है कि नस्ल के निर्माण में प्रतिमान परिवर्तित हुआ है लेकिन मानवता के प्रति नस्लवादी दृष्टिकोण नहीं बदला है। इसका परिणाम नृजातीय हिंसा, युद्ध, आतंकवाद और नरसंहार है जो मानवता के लिए खतरा है। यूनेस्को और अमेरिकन एंथ्रोपोलॉजिकल एसोसिएशन जैसी संस्थाए एवं कई बुद्धिजीवी विद्वानों और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों ने नस्लवाद नामक इस सामाजिक बीमारी के खिलाफ आवाज मुखर की है। इस प्रकार, नस्ल' शब्द का उपयोग लंबे समय से विवादास्पद बना हुआ है और मानवविज्ञानी इस विषय के साथ कभी भी सहज नहीं रहे हैं।

13.5 संदर्भ

अमेरिकन एंथ्रोपोलॉजिकल एसोसिएशन स्टेटमेंट ऑन रेस (मई 17, 1998). एक्सेस्ड ऑन : 2018, मई 22. रीट्राइव्ड फ्रॉम http://www.americananthro.org/ConnectWithAAA/Content.aspx?ItemNumber=2583

बेकर, पी.टी. (1967). द बायोलॉजिकल रेस कांसेप्ट ऐज अ रिसर्च टूल. *अमेरिकन जर्नल ऑफ फिजिकल एंथ्रोपोलॉजी* 27(1), 21-25.

बॉयड. डब्ल्यू.सी. (1950). *जेनेटिक्स एंड द रेसेस ऑफ मैन : एन इंट्रोडक्शन टू मॉडन फिजिकल एंथ्रोपोलॉजी* लिटल, ब्राउन एंड कंपनी, बोस्टन.

क्रिटिकिंग रेस (तिथि अनिर्धारित). रीट्राइव्ड फ्रॉम : http://www.understandingracc.org/history/sciencc critiquing_racc.html

डोब्जांस्की, टी. (1944). ऑन स्पीशीज एंड रेसेस ऑफ लिविंग एंड फासिल मैन. *अमेरिकन जर्नल ऑफ फिजिकल एंथ्रोपोलॉर्ज*, 2(3), 251-265.

ल्युहर-लोबान, सी. (2018). रेस एंड रेसिज्म: *एन इंट्रोडक्शन.* रॉमैन एंड लिटलफील्ड.

हेयर, ई. बालारेस्क्यू, पी., जाबलिंग, एम.ए., क्विन्टन-मर्सी, एल., चौक्स, आर., सेग्यूरल, एल., एंड हीगे, टी. (2009). जेनेटिक डाईवर्सिटी एंड द इमरजेंस ऑफ एथनिक ग्रुप्स इन सेंट्रल एशिया. *बीएमसी जेनेटिक्स* 10(1), 49.

हूटन, ई.ए. (1946). *अप फ्रॉम द एप* द मैकमिलन कंपनी.

जोशी, पी.सी. (2015). सिंपोजियम ऑन पीपल ऑफ इंडिया. *द इस्टर्न एंथ्रोपोलॉजिस्ट* 68(2), 419-474.

मैकमास्टर, एन. (2001). *रेसिज्म इन यूरोप* 1870-2000. पालग्रेव मैकमिलन.

मायर, ई. (1963) पापुलेशन्स, स्पीशीज, एंड एवोल्यूशन. *एन एब्रिजमेंट ऑफ एनिमल स्पीशीज एंड इवोल्यूशन* कैम्ब्रिज बेकनैप प्रेस. यूके.

मोलनर, एस. (2015). ूमन वैरिएशन: *रेसेस*, टाइप्स, *एंड एथनिक ग्रुप्स* राउटलेज.

मोंटेग्यु, एम.एफ.ए. (1942). *मैन्स मोस्ट डेंजरस मिथ : द फैलसी ऑफ रेस* कोलम्बिया यूनिवर्सिटी प्रेस. न्यूयार्क, यूएस.

आउटरम, एस.एम. एंड एलीसन, जी. टी. (2006). *एंथ्रोपोलॉजिकल इनसाइट्स इनटू द यूज ऑफ रेस/एथनिसिटी टू एक्सप्लोर जेनेटिक कंट्रिब्यूशन्स टू डिस्परिटीज इन हेल्त जर्नल ऑफ बायोसोशल साइंस* 38(1), 83-102.

रेस-द पॉवर ऑफ एन इल्यूशन (तिथि अनिर्धारित). ऐक्सेस्ड ऑन : 2018, मई 17. रीट्राइव्ड फ्रॉम : http://www.pbs.org/race/000_About/002_04-experts-03-02.htm

रेली, के., काफमैन, एस., एंड बोडीनो, ए. (एड.). (2003). *रेसिस्म: ए ग्लोबल रीडर* एमई शार्प.

यूनाइटेड नेशंस एजुकेशनल साइंटिफिक एंड कल्चरल ऑर्गनाइजेशन स्टेटमेंट ऑन रेस (1951). रीट्राइव्ड.

13.6 आपकी प्रगति जाचने के लिए उत्तर

1) हटटन (1946) ने नस्ल को एक समूह के रूप में परिभाषित किया, जिसके सदस्य विशिष्ट शारीरिक लक्षणों के समान रूप से समान संयोजन दिखाते हैं, जो उनके सामान्य वंश के लिए हैं।'

2) विद्वानों द्वारा नस्ल कि विभिन्न परिभाषाए कुछ सामान्यताओं को प्रदर्शित करती हैं जैसे कि

   1. नस्ल निर्माण में भौगोलिक वितरण की भूमिका।
   2. लोगों में आनुवांशिक लक्षणों को साझा करना जो सामान्य वंश, यानि प्रजनन आबादी के माध्यम से एक दूसरे से संबंधित हैं।

3) 18वीं शताब्दी में विश्व जनसंख्या को वर्गी त करने के लिए जो मानदंड इस्तेमाल किए गए थे, वे कुछ अवलोकन योग्य थे (जैसे त्वचा का रंग, बालों का रंग, बालों का रूप और नाक का रूप), मापन योग्य है (जैसे कद), और अन्य जैविक लक्षण (जैसे रक्त समूह और रक्त एंजाइम)।

4) नस्ल और नृजातीयता की अवधारणा के बीच एक सामान्य बात है, अर्थात साझा सामान्य वंश। इस समानता के बावजूद, कुछ अंतर हैं।

   1) सबसे पहले, नस्ल मुख्य रूप से एकात्मक है। आपके पास केवल एक नस्ल हो सकती है, जबकि आप कई नृजातीय संबद्धता का दावा कर सकते हैं। आप नृजातीय रूप से उड़िया और भारतीय के रूप में पहचान कर सकते हैं, लेकिन नस्लीय पहचान के लिए- आपको अनिवार्य रूप से काला या सफेद होना चाहिए।

   2) नृजातीय समूह की अवधारणा की तुलना में, नस्ल पदानुक्रमित है और सत्ता में एक अंतर्निहित असमानता है। कुछ लोगों का मत है कि नृजातीयता और नस्ल दोनों सामाजिक रूप से निर्मित हैं और दोनों ही भ्रम और कल्पना हैं। लेकिन नस्लीय श्रेणियों का लोगों के जीवन पर बहुत अधिक ठोस प्रभाव पड़ा है, क्योंकि

उनका उपयोग भेदभाव करने और संसाधनों को असमान रूप से वितरित करने और कानून के तहत सुरक्षा के लिए विभिन्न मानकों को स्थापित करने के लिए किया गया है।

5) नस्ल की अवधारणा ने नस्लवाद को जन्म दिया। नस्लवाद इस गलत धारणा पर आधारित है कि बुद्धि और विभिन्न सांस्- तिक विशेषताएं जैसे मूल्य और नैतिकता, त्वचा का रंग, नाक के रूप, बालों का रंग और इसी तरह की शारीरिक विशेषताओं के साथ विरासत में मिली हैं। इससे लोगों में यह गलत धारणा पैदा हुई कि बुद्धि के साथ-साथ सांस्- तिक लक्षण भी जैविक विशेषताओं की तरह विरासत में मिले हैं। ऐसी मान्यताएं इस धारणा पर आधारित हैं कि एक समूह दूसरे से श्रेष्ठ है। यूजेनिक आंदोलन, नस्लों की शुद्धता की धारणा और लोगों का उत्पीड़न नस्लवाद का परिणाम है जो कि सिर्फ एक नस्लीय भ्रांति मात्र है।

6) कुछ नस्लों को शारीरिक और जैविक विशेषताओं के आधार पर दूसरों की तुलना में स्पष्ट रूप से बेहतर और उन्नत के रूप में पहचान की गई है। इन विशेषताओं को गलत तरीके से मानसिक, भावनात्मक, बौद्धिक और सांस्- तिक विशेषताओं के रूप में अच्छी तरह से बाध्य माना जाता था। उदाहरण के लिए जब यूरोपीय खोजकर्ताओं ने हॉटट्रॉट्स और अफ्रीका के बुशमैन लोगों पर उनकी अपनी विशेषताओं की तुलना में उन लोगों की उपस्थिति, भाषा और संस्- ति प्रथाओं को निम्न और अमानवीय मानक के रूप में पाया।

7) नस्लवाद की अवधारणा की आलोचना करने वाले तीन विद्वान थेः (क) एशले मोंटेग्यु (ख) फ्रैंक बी लिविंगस्टोन (ग) जैक्स बारजुन।

8) नस्ल पर यूनेस्को के बयान को जून 1951 को यूनेस्को हाउस में ड्रा ट किया गया था, जबकि अमेरिकन एंथ्रोपोलॉजिकल एसोसिएशन के कार्यकारी बोर्ड ने 17 मई 1998 में नस्ल पर बयान दिया.

9) नस्ल पर यूनेस्को के बयान को जून 1951 को यूनेस्को हाउस में ड्रा ट किया गया था इसके दो मुख्य बिंदु हैं :

क) मानव समूहों के बीच शारीरिक भिन्नता उनकी अंतर वंशानुगत संरचना में अंतर तथा वातावरणों में अंतर के कारण है। कई मामलों में, दोनों प्रभाव कार्य करते हैं। आनुवांशिकी के अनुसार वंशानुगत अंतर प्रक्रियाओं के दो युग्मों की क्रियाशीलता का परिणाम हैं। एक तरफ, अलग-अलग आबादी को प्रा तिक चयन और सामग्री कणों (जीन) में सामयिक परिवर्तन (उत्परिवर्तन) द्वारा निरंतर बदला जा रहा है जो आनुवंशिकता को नियंत्रित करते हैं। जीन आवृत्ति में परिवर्तन और विवाह के रीति-रिवाजों और प्रजनन संरचना से आबादी भी प्रभावित होती है। दूसरी ओर, पारगमन लगातार अलग-अलग स्थापित विभाजन को तोड़ रहा है।

ख) मानव नस्ल को विभिन्न मानवशास्त्रियों द्वारा अलग-अलग तरीकों से वर्गी त किया जा सकता है और किया गया है। अधिकांश लोग मौजूदा मानव जाति के बड़े हिस्से को कम से कम तीन बड़ी इकाइयों में वर्गी त करने पर सहमत हैं,

जिन्हें प्रमुख समूह कहा जा सकता है (फ्रेंच, ग्रैंड-रेस में)। ऐसा वर्गीकरण किसी एक शारीरिक लक्षण पर निर्भर नहीं करता है। इसके अलावा, रूपात्मक दृष्टि से, एक विशेष जाति को दूसरे से श्रेष्ठ या हीन मानना असंभव है।

10) अमेरिकन एंथ्रोपोलॉजिकल एसोसिएशन (1998) के अनुसार 20वीं शताब्दी के अंत में अब हम समझते हैं कि मानव सांस्कृतिक व्यवहार को सीखा जाता है, जन्म से शुरू होने वाले शिशुओं में अनुकूलित होता है और हमेशा संशोधन के अधीन होता है। कोई भी मानव निर्मित संस्कृति या भाषा के साथ पैदा नहीं होता है। आनुवांशिक प्रवृत्ति की परवाह किए बिना, हमारे स्वभाव और व्यक्तित्व, अर्थ और मूल्यों के खण्ड के भीतर विकसित होते हैं जिन्हें हम संस्कृति' कहते हैं।